दिसम्बर , 2022, वर्ष : 43 अंक : 12
www.indiatibet.net

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

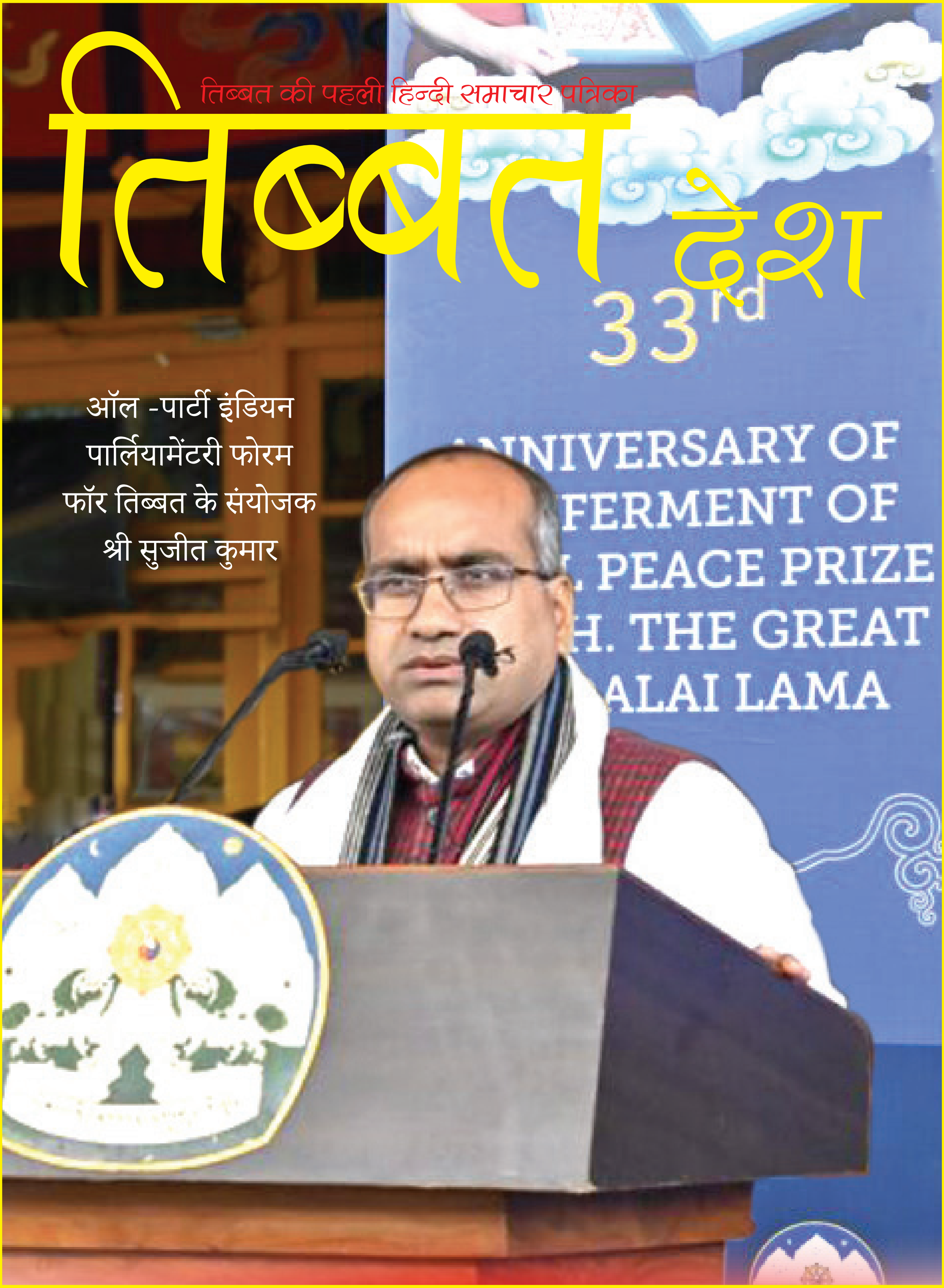

ऑल -पार्टी इंडियन
पार्लियामेंटरी फोरम
फॉर तिब्बत के संयोजक
श्री सुजीत कुमार

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

दिसम्बर , 2022, वर्ष : 43 अंक : 12

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
जमयंग दोरजी

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
तेनजिन जोरदेन, ताशी देकि

वितरण प्रबंधक
छोन्यी छेरिंग

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- एसईई लर्निंग कांफ्रेंस का उद्घाटन 1
- धर्मनिरपेक्ष नैतिकता को लेकर सलवान एजुकेशन ट्रस्ट से बातचीत 2
- महाबोधि मंदिर के दर्शन 3
- पाली- संस्कृत अंतरराष्ट्रीय भिक्खु आदान-प्रदान कार्यक्रम का उद्घाटन 4
- जागृत मन की व्याख्या- पहला दिन, दूसरा दिन और तीसरा दिन 5
- अमेरिकी सांसदों ने तिब्बत में चीन के आवासीय स्कूलों की संयुक्त राष्ट्र जांच की मांग की 6
- सिनसिनाटी के मेयर आफताब पुरेवल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की अपनी पहली यात्रा की 7
- चीन में मानवाधिकारों की निगरानी के लिए जापानी संसदीय कॉकस गठित 8
- धर्मशाला में तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की ३३वीं वर्षगांठ मनाई 9
- कनाडा की संसद ने सर्वसम्मति से तिब्बत मुद्दे के समाधान के लिए प्रस्तावित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन करने वाला प्रस्ताव पारित किया 10
- सिक्योंग ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक सह संगोष्ठी के उद्घाटन को संबोधित किया 11

समाचार -

- तिब्बत के अंदर बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह में भागीदारी की पूछताछ के लिए थर्मोफिशर साइंटिफिक को सीईसीसीने पत्र लिखा 12
- दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए शिक्षा विभाग की एक सप्ताह की नेतृत्व कार्यशाला 13
- सिक्योंग ने 'फ्लेम ऑफ होप' के कार्यकर्ताओं के समूह से मुलाकात की 14
- स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने छात्रों को तिब्बती लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास के बारे में बताया 15
- डिप्टी स्पीकर ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ के हिमालय महोत्सव में युवा पीढ़ी की भागीदारी को प्रोत्साहित किया 16
- 'फ्री तिब्बत- ए वॉइस फ्रॉम असम' के नेतृत्व में 'सांगपो- सियांग-ब्रह्मपुत्र बचाओ' अभियान का मुद्दा नई दिल्ली में उठा 17
- भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने रांची में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'मंथन २०२२' आयोजित की 18
- भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने रांची में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'मंथन २०२२' आयोजित की 19
- भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने रांची में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'मंथन २०२२' आयोजित की 20

मुद्रक एवं प्रकाशक जमयांग दोरजी द्वारा प्रेम गुलाटी , डोली ऑफसेट प्रिंटर्स , डी -१५२ , एफ. एफ. सी. ओखला , नई दिल्ली -११००२० से मुद्रीत

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट
www.indiatibet.net
Email:
indiatibet7@gmail.com

अपनी बात ❖ शांति नोबल पुरस्कार प्राप्त दलाईलामा से प्रेरित है तिब्बती संघर्ष

तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाई लामा को विश्वशांति के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार 1989 में 10 दिसम्बर को प्रदान किये जाने के उपलक्ष्य में हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी अनेकानेक कार्यक्रम विष्व के विभिन्न देशो में आयोजित किये गये। इससे स्पष्ट है कि तिब्बती समुदाय एवं तिब्बत समर्थक चीन सरकार की साम्राज्यवादी नीति के विरोध में सुव्यवस्थित रूप से शांतिपूर्ण संघर्ष की राह पर हैं। साम्राज्यवादी चीन ने 1959 में स्वतंत्र तिब्बत देश पर अपना नियंत्रण कर लिया था। अवैध चीनी नियंत्रण के पूर्व तिब्बत देश भारत एवं चीन के बीच एक बफर स्टेट (मध्यस्थ राज्य) था। तब भारत की सीमा तिब्बत से जुड़ी थी। चीन की सीमा भारत से नहीं जुड़ी थी। लेकिन तिब्बत के परतंत्र होते ही भारत-तिब्बत सीमा का स्थान भारत-चीन सीमा ने ले लिया। इसी के परिणामस्वरूप चीन ने 1962 में हमला किया और एक बड़े भारतीय भूभाग को भी हथिया लिया। तिब्बत के स्वतंत्र रहते भारत-चीन संबंध अत्यन्त मधुर थे। तिब्बत समर्थको ने इस बार के कार्यक्रमों में भी इन प्रामाणिक तथ्यों की सार्थक चर्चा करते हुए चीनी चंगुल से तिब्बत को मुक्त कराने पर जोर दिया। यद्यपि तिब्बती समुदाय एवं उसका लोकतांत्रिक तरीके से मतदान द्वारा निर्वाचित नेतृत्व सिर्फ "वास्तविक स्वायत्तता" की मांग कर रहा है लेकिन तिब्बत समर्थक तिब्बत की "स्वतंत्रता" के पक्ष में हैं।

प्रारम्भ में तिब्बती भी तिब्बत की पूर्ण स्वतंत्रता के पक्ष में थे लेकिन बाद में "मध्यममार्ग की नीति" अपनाते हुए चीन के अंदर तिब्बत को "वास्तविक स्वायत्तता" देने की मांग की गई। यह मांग चीनी संविधान एवं उसके स्वायत्तता संबंधी कानून के अनुकूल है। चीन सरकार के पास प्रतिरक्षा एवं वैदेशिक मामले हों तथा शिक्षा एवं कृषि समेत अन्य सभी विषय तिब्बत सरकार को सौंपे जायें। इससे चीन की एकता-अखंडता-संप्रभुता की रक्षा के साथ ही तिब्बतियों को भी स्वषासन का अधिकार मिल जायेगा। यही है मध्यममार्ग नीति। दलाई लामा एवं लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित तिब्बत की निर्वासित सरकार का मत है कि चीन सरकार षड्यंत्रपूर्वक तिब्बत में अत्याचार कर रही है तथा योजनापूर्वक तिब्बती पहचान को भी मिटाने में लगी है। ऐसी स्थिति में "वास्तविक स्वायत्तता" हेतु चीन से मांग तर्कसंगत है ताकि तिब्बती पहचान की सुरक्षा हो सके। राष्ट्रीय पहचान खोकर पूर्ण स्वतंत्रता पाने का कोई महत्व नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस अर्थात् 10 दिसबंर के कार्यक्रमों में भी इसी आधार पर तिब्बत समर्थकों ने भी तिब्बत हेतु "वास्तविक स्वायत्तता" की मांग का समर्थन किया।

प्रसन्नता की बात है कि तिब्बतियों की भाँति तिब्बत समर्थक भी शांतिपूर्ण एवं अहिंसक तिब्बती संघर्ष के पक्ष में हैं। वे शांतिप्रिय दलाईलामा के इन विचारों से सहमत हैं कि तिब्बत समस्या का समाधान शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से हो। इस संबंघ में दलाई लामा स्वम गांधी के अनुयायी हैं। गांधी दर्शन में शांति, अहिंसा तथा सत्याग्रह को अपनाने पर जोर है। इसका प्रयोग गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सफलतापूर्वक किया था। उन्होंने अपनी आलोचनाओं की भी परवाह नहीं की थी। उनके आलोचक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आवष्यकतानुसार हिंसा को उचित मानते थे लेकिन गांधी ने उनके विचार का तथा ऐसे लोगों का समर्थन नहीं किया। शांति एवं अहिंसा में ऐसी ही अटूट निष्ठा दलाई लामा की है।

दलाई लामा की शांति एवं अहिंसक प्रतिबद्धता पर आधारित "मध्यम मार्ग नीति" में विष्व के अनेक देशो की रुचि सराहनीय है। इसी दिसबंर, 2022 में कनाडा की संसद ने सर्वसम्मति से मध्यममार्ग नीति का समर्थन करते हुए तिब्बत को "वास्तविक स्वायत्तता" देने को न्यायसंगत माना है तथा चीन के साथ तिब्बत की वार्ता पुनः शुरू करने की मांग की है। कनाडा का स्पष्ट मत है कि चीन सरकार तिब्बत में मानवाधिकारों का हनन बंद करे तथा तिब्बत से शीघ्र वार्ता कर समस्या का समाधान करे। चीन सरकार ने तिब्बत में मीडिया को नियंत्रित कर रखा है। कोरोना महामारी से वहाँ स्थिति भयावह है लेकिन सेंसरषिप होने के कारण सही सूचना से संपूर्ण संसार वंचित है। तिब्बत सरकार द्वारा इन्हीं तथ्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बत एडवोकेसी कैंपेन के अंतर्गत उजागर किया जा रहा है। निर्वासित तिब्बत सरकार के राजप्रमुख (सिक्योंग) पेम्पा त्सेरिंग अपने प्रवास के दौरान अनेक देशो में यही अपील कर रहे हैं कि तिब्बत में मानवाधिकारों की सुरक्षा हेतु चीन सरकार पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ाया जाये।

दलाई लामा यद्यपि अपने सारे राजनीतिक अधिकार निर्वासित तिब्बत सरकार को सौंप स्वम आध्यात्मिक दायित्व तक सीमित हैं फिर भी वे तिब्बत की स्थिति से बहुत व्यथित हैं। कोरोना महामारी के कारण गत तीन वर्षो से उनका विदेशो में जाना बंद था। भारत में भी वे कहीं नहीं जाते थे। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में धर्मषाला स्थित अपने निवास से वे ऑनलाइन प्रवचन करते थे। खुषी की बात है कि उन्होंने अब भ्रमण शुरू कर दिया है। अभी 29 से 31 दिसबंर तक वे बोधगया में पूजा एवं प्रवचन कर रहे थे। उसमें भारतीय हिमालय क्षेत्र के साथ मंगोलिया और रूस के विभिन्न क्षेत्रों से भी भगवान् बुद्ध के उपासक शामिल थे। सब उनके दीर्घजीवन हेतु भगवान् से प्रार्थना करते हुए उनके प्रवचन सुन रहे थे। उनके दर्शन हेतु हजारों-लाखों की भीड़ से सिद्ध है कि दलाई लामा का विश्व्यापी प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है।

प्रो. श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महाविद्यालय, तिजारा (राजस्थान)
मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

❖ एसईई लर्निंग कांफ्रेंस का उद्घाटन

०९दिसंबर, २०२२

थेकछेन छोएलिंग, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत।०९दिसंबर २०२२ शुक्रवार की सुबह नई बनी 'दलाई लामा लाइब्रेरी एंड आर्काइव बिल्डिंग' के ऑडियंस हॉल में 'एसईई लर्निंग®: ए वर्ल्डवाइड इनिशिएटिव फॉर एजुकेटिंग द हार्ट एंड माइंड (हृदय और मन के शिक्षण को लेकर वैश्विक पहल)' विषय पर एक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में २००से अधिक लोग एकत्रित हुए। इनमें से कई एमोरी कंपेशन सेंटर और अटलांटा के जॉर्जिया स्थित एमोरी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में चल रहे सोशल, इमोशनल एंड एथिकल लर्निंग (सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षण) परियोजना से जुड़े थे।

परम पावन दलाई लामा ने सभा को संबोधित किया।

परम पावन ने जे. सोंखापा के 'प्रतीत्य समुत्पाद की स्तुति' से एक गाथा (श्लोक) का पाठ किया, जो इस प्रकार है:

बुद्ध के मार्ग पर चलने के लिए,
उसके वचनों के अध्ययन में ढिलाई न करते हुए,
और योग अभ्यास के महान संकल्प के साथ,
भिक्षु सत्य के उस महान शोधक के प्रति स्वयं को समर्पित करता है।

उन्होंने बताया कि उपरोक्त पंक्तियां उनके स्वयं के अनुभव से संबंधित है। यह इसलिए कि उन्होंने ल्हासा में उपसंपदा दीक्षा ली थी और वहीं पर भिक्षु के रूप में भी दीक्षित हुए थे। इसके बाद वहीं पर उन्होंने त्रिपिटकों और अन्य शास्त्रों का अध्ययन किया था। यहां तक कि उन्होंने अपने गुरुओं, विशेषकर लिंग रिनपोछे के साथ चंद्रकीर्ति के 'मध्यम मार्ग प्रवेश (मध्यमकावतार)' को भी कंठस्थ किया था।

भिक्षु दीक्षा लेने के बाद उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं का अध्ययन किया। लेकिन तिब्बत में रहने के दौरान उन्होंने जो कुछ सीखा, उसे समेकित करने में असमर्थ रहे। उन्होंने कहा कि निर्वासन में आने के बाद से उन्होंने ऐसा करने की कोशिश की है। इसका सार बोधिचित्त और शून्यता की समझ को विकसित करना है। उन्होंने घोषणा की कि सोंखापा की तरह, 'योग अभ्यास के महान संकल्प के साथ यह भिक्षु स्वयं को सत्य के उस महान वाहक- बुद्ध के प्रति समर्पित करता है।'

'मैं एकाग्रता और विशेष अंतर्दृष्टि को संयोजित करने के लिए तरस रहा हूं और इस तरह देखने के पथ तक पहुंच गया हूं। जैसा कि चंद्रकीर्ति अपने 'मध्यमकावतार' में कहते हैं, जो इस प्रकार है:

'ज्ञान के प्रकाश की किरणों से प्रकाशित बोधिसत्व अपनी खुली हथेली पर रखें आंवले में स्पष्ट रूप से देखते हैं कि उनकी संपूर्णता में तीनों क्षेत्र अपने आरंभ से ही अजन्मे हैं और पारंपरिक सत्य के बल पर वे मुक्ति की यात्रा करते हैं।' - ६.२२४

'और बोधिसत्व राजहंस की तरह अन्य निपुण हंसों के आगे पारंपरिक और परम सत्य के सफेद पंखों के सहारे उड़ते हुए सद्गुणों की शक्तिशाली झोकों से प्रेरित होकर उत्कृष्ट सुदूर तट (परम शांति) पर पहुंचने के लिए विजेताओं की तरह उड़ान भरेंगे। - ६.२२६

'बोधिसत्व हमेशा दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित होते हैं। इस प्रकार, अध्ययन का उद्देश्य अन्य प्राणियों का कल्याण करना है। हमारे लिए यह दुनिया के इंसान हैं।'

'हममें से किसी के भी १००साल से अधिक जीने की संभावना नहीं है। मेरा मानना है कि जब तक हम जीवित हैं, हमें अध्ययन और साधना करनी चाहिए। खुद को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। यह मैंने किया है। उद्देश्य यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में जो सीखते हैं उसे एकीकृत करें। चूंकि मैंने परोपकारी बोधिचित्त और प्रतीत्य समुत्पाद की समझ को अपने लिए उपयोगी पाया है, इसलिए मैंने जो सीखा है उसे दूसरों के साथ साझा करने का प्रयास करता हूं।'

'लगभग हम सभी का पालन-पोषण हमारी माताओं ने किया है। उनके प्यार और स्नेह का आनंद लेते हुए हमें करुणा का पहला पाठ मिला। हमें इन भावनाओं का पोषण और विकास करने की आवश्यकता है और फिर उन्हें दूसरों के साथ साझा करना है। यह कुछ ऐसा है जो हम कर सकते हैं। यदि हम करुणामय जीवन जीते हैं तो मृत्यु के समय हम अपने आप आराम से ऐसा करने में सक्षम होंगे।'

'मेरे जीवनकाल में इतना खून-खराबा हुआ है। मैंने प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, कोरियाई युद्ध, वियतनाम युद्ध आदि की विनाशलीलाएं देखी हैं। अब हमें एक शांतिपूर्ण विश्व बनाना है। बाहरी हथियारों पर भरोसा करने के बजाय हमें अपने भीतर करुणा की रक्षा की जरूरत है। विश्व शांति का आधार करुणा और सौहार्दता है।'

'विश्व शांति आसमान से नहीं टपकेगी। इसके लिए हमें अपने मन में दूसरों के लिए करुणा विकसित करना होगा। सौहार्दता आवश्यक रूप से धार्मिक साधना तक ही सीमित नहीं है; निस्संदेह इसे धर्मनिरपेक्ष नैतिकता के संदर्भ में विकसित किया जा सकता है। मैं आशा करता हूं कि अगले कुछ दशकों में मैं दूसरों के साथ करुणा साझा करना जारी रख सकूंगा।'

'मैं दिन-रात करुणा की साधना करता हूँ। मेरे दोस्तों, मैं आपसे ऐसा करने के लिए अनुरोध करता हूं और प्रोत्साहित करता हूं।'

इस कांफ्रेंस में परम पावन को कई पुस्तकें भेंट की गईं, जिनमें एसईई लर्निंग हाई स्कूल पाठ्यक्रम का चौथा खंड और पिछले तीन खंडों का हिंदी अनुवाद

शामिल है। उन्होंने जवाब दिया:

'आप जो कर रहे हैं, मैं उसकी बहुत सराहना करता हूं।'

'और कुछ और जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूं वह है ग्लोबल वार्मिंग। जैसे-जैसे यह अधिक से अधिक गंभीर होता जा रहा है, इसके प्रभाव हमारे नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं। जैसे-जैसे यह गर्म और गर्म होता जाता है, ऐसा लगता है कि अंततः हमारी दुनिया आग से भस्म हो सकती है।'

एसईई लर्निंग पाठ्यचर्या में भाग लेने वाले छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में परम पावन ने यह समझने पर जोर दिया की कि हमारा चित्त कैसे काम करता है। उन्होंने कहा कि यह हमें इस बात को समझने में मदद करता है कि स्वार्थ, भय और क्रोध हमारे लिए अच्छा नहीं है। जबकि दूसरों के प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार, खुले दिमाग से विचार करने से हमें आंतरिक शक्ति मिलती है। उन्होंने बताया कि हम अपनी इन्द्रिय चेतनाओं के माध्यम से अपने आसपास की चीजों के बारे में जागरूक हो जाते हैं। लेकिन हम केवल विश्लेषण और न्याय कर सकते हैं कि हमें अपनी मानसिक चेतना को नियोजित करके क्या करना चाहिए। और अगर हम अपने आप से पूछें कि चेतना कैसे या कहां से उत्पन्न होती है, तो ऐसा लगता है कि यह एक अनादि काल से निरंतर चलने वाली चीज है।

एमोरी कंपेशन सेंटर के निदेशक और बैठक के संचालक डॉ. लोबसंग तेनज़िन नेगी ने सत्र का समापन किया। उन्होंने अपने समय के प्रति इतने उदार होने के लिए परम पावन को धन्यवाद दिया। फिर, उन्होंने प्रार्थना की और संभावना जताई कि एसईई लर्निंग कार्यक्रम के माध्यम से जो भी योग्यता सृजित की गई है, वह परम पावन के अच्छे स्वास्थ्य और लंबे जीवन में योगदान करेगी और यह हर जगह शिक्षा का हिस्सा बन जाएगी।

❖ धर्मनिरपेक्ष नैतिकता को लेकर सलवान एजुकेशन ट्रस्ट से बातचीत

२१ दिसंबर, २०२२

नई दिल्ली, भारत।२१ दिसंबर, २०२२की प्रातः जब परम पावन दलाई लामा गाड़ी से गुरुग्राम के सलवान पब्लिक स्कूल पहुंचे तो मौसम सर्द था और थोड़ी धुंध थी। आगमन पर सलवान एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष सुशील दत्त सलवान ने उनका स्वागत किया और उन्हें स्कूल की लॉबी में ले गए। पूरे गुरुग्राम के ५८स्कूलों के प्रधानाध्यापकों और कर्मचारियों ने परम पावन का अभिवादन किया और इसके बाद सबने चाय और बिस्कुट का आनंद लिया।

इसके बाद परम पावन ने अपना संबोधन प्रारंभ किया। 'भाइयो और बहनो। हम सभी आठ अरब मनुष्य वास्तव में भाई-बहन हैं। हम एक ही तरह से पैदा हुए हैं और लगभग हम सभी का पालन-पोषण हमारी माताओं ने एक ही तरह से किया है। इसका कारण यह है कि अंततः इस दुनिया में हर कोई सौहार्दता पर निर्भर करता है।

'बचपन में हम एक-दूसरे के साथ खेलते हैं। उस समय हम इस बात की परवाह नहीं करते कि हमारा धर्म या राष्ट्रीयता क्या हो सकती है। अगर हमारे साथी मुस्कुराते हैं और खेलते हैं तो हमें उनके साथ खेलने में खुशी होती है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अनिवार्य रूप से हम सभी मनुष्य के रूप में एक समान हैं। हालांकि, शिक्षा हमें अपने बीच के सतही मतभेदों पर ध्यान केंद्रित करना सिखाती है, जिससे संघर्ष और भेदभाव हो सकता है।'

'भारत में करुणा और अहिंसा तथा किसी का कोई नुकसान न करने की प्राचीन परंपरा है। हमें इन बुनियादी मानवीय मूल्यों का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। बाघों और शेरों के तेज दांत और पंजे होते हैं जो अन्य जानवरों को शिकार करने और खाने की उनकी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। लेकिन मानव के रूप से पता चलता है कि हम करुणामय होने और नुकसान न करने के लिए अधिक इच्छुक हैं। जैविक दृष्टिकोण से हमें शांतिपूर्ण प्राणी होना चाहिए।

'चूंकि हम दूसरों की दया पर निर्भर होकर जीवित रहते हैं, इसलिए हमें उनके प्रति करुणा और 'अहिंसा' की भावना बनाए रखने की आवश्यकता है। अतीत में अत्यधिक हिंसा हुई है क्योंकि हमने अपनी बुद्धि का उपयोग हथियार विकसित करने और अपने पड़ोसियों को नष्ट करने की योजना बनाने के लिए किया है।'

'जब हम मिलते हैं तो हम दूसरे इंसान को उसके मानवीय चेहरे से पहचानते हैं। अगर हम किसी तीन नेत्र वाले से मिले तो यह एक वास्तविक आश्चर्य होगा। हम सभी एक चेहरे, दो हाथ और दो पैरों में शारीरिक रूप से समान हैं। हमें अपने मूल मानव स्वभाव के अनुसार जीना चाहिए, जो कि करुणाशील होना है। क्या अतीत की हिंसा ने एक बेहतर और सुरक्षित दुनिया का निर्माण किया? -मैंने नहीं किया। इसलिए, हमें एक अधिक सुखी, अधिक शांतिपूर्ण

विश्व बनाने का प्रयास करना चाहिए। इसका अर्थ है भाई-बहनों के रूप में खुशी-खुशी साथ रहना।'

'मुझे विभिन्न महाद्वीपों पर विभिन्न देशों का दौरा करने का अवसर मिला है और मुझे हर जगह एक ही तरह के मानवीय चेहरे मिले हैं। मैं जहां भी जाता हूं, मुस्कुराता हूं और प्रतिउत्तर में लोग भी दोस्ताना तरीके से मुस्कुराते हैं।

'शांति आसमान से नहीं टपकेगी। यह हम पर निर्भर करता है कि हम भाईचारे की सच्ची भावना विकसित करें। सतही तौर पर हमारे बीच मतभेद हैं, लेकिन यह दूसरों से लड़ने का कोई आधार नहीं हैं। हमें हथियारों से मुक्त एक शांतिपूर्ण विश्व बनाने के लक्ष्य की ओर बढ़ना है। यदि असहमति उत्पन्न होती है तो हमें उन्हें बातचीत के माध्यम से हल करना चाहिए। हथियार किसी काम के नहीं हैं।'

'मैं यहां अपने युवा भाइयों और बहनों के साथ यही साझा करना चाहता हूं।'

परम पावन ने आगे कहा कि पश्चिमी मूल्य भौतिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि प्राचीन भारत में लोगों ने चित्त के कार्य की खोज की। उन्होंने माना कि हमारे पास इंद्रिय चेतना है, लेकिन मानसिक चेतना के महत्व को भी उजागर किया। उन्होंने बताया कि जब हम मरते हैं तो हमारे स्थूल दिमाग हमारे सूक्ष्म दिमाग में विलीन हो जाते हैं। यह तब भी देखा जा सकता है जब हम सो जाते हैं। परम पावन ने स्वीकार किया कि तिब्बती भिक्षुओं की तरह भारतीय योगियों के पास चित्त पर काम करने का गहरा अनुभव है।

जब हम मरने की प्रक्रिया से गुजरते हैं तो शरीर के तत्व घुल जाते हैं और मन के स्थूल स्तर सूक्ष्म स्तरों में विलीन हो जाते हैं। यह तीन दृष्टियों के रूप में जाना जाता है- श्वेताभ रूप और ३३धारणाओं की समाप्ति, लाल रंग की वृद्धि जिसके दौरान ४० अवधारणाएँ समाप्त हो जाती हैं और काले। मृत्यु के दौरान अंतिम सात अवधारणाएं समाप्त हो जाती हैं।

परम पावन ने स्मरण किया कि सातवीं शताब्दी में तिब्बती राजा ने भारतीय देवनागरी वर्णमाला पर आधारित तिब्बती लिपि की रचना की। एक शताब्दी बाद एक अन्य राजा ने महान नालंदा आचार्य शांतरक्षित को तिब्बत में आमंत्रित किया तो उन्होंने तिब्बती में बौद्ध साहित्य के अनुवाद को प्रोत्साहित किया। एक परिणाम यह है कि आज बौद्ध मनोविज्ञान और चित्त के विज्ञान की व्याख्या करने के लिए सबसे अच्छी और सबसे सटीक भाषा तिब्बती है। परम पावन ने सुझाव दिया कि भारतीय छात्रों को प्राचीन भारतीय परंपरा के आधार पर प्रशिक्षण और अपने चित्त को नियंत्रित करने के बारे में और अधिक सीखने की आवश्यकता है, जिसे तिब्बत में जीवित रखा गया है।

अपनी अंतिम टिप्पणी में परम पावन ने कहा कि चीन और भारत पृथ्वी पर दो सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं। लेकिन, चीन में तो उतार-चढ़ाव आए हैं जबकि भारत लोकतंत्र और धार्मिक स्वतंत्रता को संजोए रहा है।

परम पावन ने पुष्टि की कि लोकतंत्र के सम्मान और सभी धार्मिक परंपराओं के सम्मान की यह प्रथा धर्मनिरपेक्ष मूल्यों पर आधारित, अच्छा और बुद्धिमत्तापूर्ण भी है।

अंत में उन्होंने कहा, 'धन्यवाद।'

❖ महाबोधि मंदिर के दर्शन

२३ दिसंबर, २०२२

बोधगया, बिहार, भारत।२२ दिसंबर को बोधगया पहुंचने के बाद परम पावन दलाई लामा आज २३दिसंबर, २०२२की सुबह ज्ञानपीठ पर अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करने के लिए महाबोधि मंदिर गए। उनकी गाड़ी तिब्बती मठ, गादेन फेल्ग्येलिंग से गोल्फ कार्ट के मुख्य प्रवेश द्वार की ओर से निकली, जहां से वे आसानी से उन भक्तों को देख सकते थे जो सड़क पर पंक्तिबद्ध थे और वे उन्हें देख सकते थे। बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति (बीटीएमसी) के सचिव नांगजे दोरजी ने उनका स्वागत किया।

सावधानी से सीढ़ियाँ उतरते हुए परम पावन बीच-बीच में मंदिर के शीर्ष स्तूप पर दृष्टि डालते रहे और शांत प्रार्थना भी करते रहे। कई बार उन्होंने उस बोधिवृक्ष की ओर देखा जिसके नीचे साधनारत बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। बीच-बीच में वह अपनी दाहिनी और बाईं ओर देखते, मुस्कराते रहे और उन लोगों की ओर हाथ हिलाकर उनका अभिवादन करते रहे, जो खुद पर उनकी दृष्टि पड़ने की आशा में टकटकी लगाए हुए थे।

परम पावन ने बोधि वृक्ष के मूल में नमन किया, अपना सम्मान व्यक्त किया और मंदिर की परिक्रमा करने के लिए आगे बढ़े। इस दौरान उन्होंने पत्थर की रेलिंग से झांकते युवा और वृद्ध लोगों का हाथ हिलाकर और मुस्कुराकर अभिवादन स्वीकार किया। मंदिर की दूसरी ओर से परम पावन ने चैपल में प्रवेश किया, अपना सम्मान व्यक्त किया और बुद्ध की प्रसिद्ध मूर्ति के सामने बैठ गए। उनके साथ थेरवाद भिक्षु और नामग्याल मठ के भिक्षु भी थे।

❖ पाली- संस्कृत अंतरराष्ट्रीय भिक्खु आदान-प्रदान कार्यक्रम का उद्घाटन

२७ दिसंबर, २०२२

बोधगया, बिहार, भारत।२७ दिसंबर, २०२२की सुबह जब सूर्य आकाश से महाबोधि मंदिर के ऊपर धुंधला प्रकाश बिखेर रहा था, उसी समय परम पावन दलाई लामा गोल्फ कार्ट में सवार होकर गदेन फेलग्येलिंग तिब्बती विहार से वाट-पा थाई मंदिर पहुंचे।

मंदिर में भिक्षुओं ने परम पावन का गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें अंदर तक लेकर गए। मंच पर अपना आसन ग्रहण करने से पहले उन्हें अन्य अतिथियों के साथ बुद्ध की एक प्रतिमा की प्राणप्रतिष्ठा करने के लिए आमंत्रित किया गया, जिनमें श्रद्धेय डॉ वारकागोडा धम्मसिद्धि, शाक्य गोंगमा त्रिचेन रिनपोछे और गादेन ठि

रिनपोछे शामिल थे।

इसके बाद पहले पाली में बौद्ध शरण प्रार्थनाओं का पाठ किया गया, फिर बाद में तिब्बती में 'हृदय सूत्र' का जाप हुआ।

अपने स्वागत भाषण में श्रद्धेय खेनसुर लोबसंग ग्यालत्सेन ने सबसे पहले परम पावन और प्रमुख अतिथियों के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया और परम पावन और प्रमुख अतिथियों की उपस्थिति के लिए उनका आभार जताया। उन्होंने आगे बताया कि पांच वर्षीय पाली और संस्कृत अंतरराष्ट्रीय भिक्खु आदान-प्रदान कार्यक्रम का उद्घाटन आज किया जा रहा है। इसका आयोजन परम पावन की मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने, विश्व की धार्मिक परंपराओं के बीच सद्भाव को प्रोत्साहित करने, तिब्बती संस्कृति के संरक्षण को सुनिश्चित करने और प्राचीन भारतीय ज्ञान के मूल्य के बारे में जागरूकता को पुनर्जीवित करने के लिए किया जा रहा है।

इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि हम सभी बुद्ध शाक्यमुनि के अनुयायी हैं और विश्व शांति स्थापित करना हमारा साझा लक्ष्य है। कार्यक्रम का उद्देश्य पाली और संस्कृत परंपराओं के अनुयायियों के बीच संबंधों को मजबूत करना है, जिससे वे एक-दूसरे के बारे में जान सकें।

वट-पा मंदिर के महंथ श्रद्धेय डॉ. फ्रा बोधिनंधामुनी ने खुशी का इजहार करते हुए कहा की कि यह तीसरा अवसर है जब परम पावन ने समुदाय को आशीर्वाद दिया था। उन्होंने कहा कि पांच साल का आदान-प्रदान कार्यक्रम आज इसी परिसर से शुरू हो रहा है।

आदान- प्रदान कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ प्रमुख अतिथियों द्वारा बैनरों को लहराने और इरादे की घोषणा पर हस्ताक्षर करने के साथ हुआ।

तत्पश्चात परम पावन को सभा को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने कहा, 'यहां बोधगया के इस पवित्र स्थल पर एकत्रित हम सभी बुद्ध के अनुयायी हैं। हम सभी चार प्रमाणों की समझ के आधार पर उनकी शिक्षाओं को लागू करने का प्रयास करते हैं। ये चार प्रमाण हैं :

'सभी गढ़ी गई घटनाएं क्षणिक हैं।

सभी प्रदूषित घटनाएं असंतोषजनक हैं या पीड़ादायक हैं।

सभी घटनाएं खाली और निःस्वार्थ हैं।

सच्ची शांति तो निर्वाण में है।'

'हम सभी खुश रहना चाहते हैं, इसलिए हमें अपने बीच मित्रता और सद्भाव की तलाश करनी चाहिए। चूंकि धार्मिक साधना सद्भावना और स्नेह पैदा करने के बारे में है, इसलिए यह देखकर बहुत दुख होता है कि विभिन्न परंपराओं के लोग एक-दूसरे से झगड़ा करते हैं। जहां तक हमारा संबंध है, हमें ईमानदारी से बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए। यदि बुद्ध हमें विवाद करते हुए या एक-दूसरे की निंदा करते हुए देखें, तो मुझे लगता है कि वे हमें ऐसा न करने के लिए कह सकते हैं।'

'हम एक ही गुरु और एक ही शिक्षा का अनुसरण करते हैं। इसलिए इसका पुख्ता तर्क है कि हमारे बीच सद्भाव होना चाहिए चाहे हम पाली परंपरा से हों या संस्कृत परंपरा से संबंधित हो।'

'जब मैं वहाँ की दीवार पर बुद्ध की तस्वीर को देखता हूँ और उनके हाथों की स्थिति को देखता हूं, तो मुझे याद आता है कि वे यह संकेत नहीं देते कि वे हमारे सिर पर हाथ फेरेंगे, न ही वह हमें मारने के लिए मुट्ठी बांधेंगे। यह वह शिक्षा है जो उन्होंने हमें दी थी और हमें इसे अमल में लाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसका मतलब है कि दिन-ब-दिन लगातार साधना करना। इसी तरह हम भी अंततः बुद्ध की तरह बन सकते हैं।'

'बुद्ध ने हमें सिखाया कि जीवन का पूरा चक्र हर आवश्यक कोने से खाली है। नतीजतन, मन को पूरी तरह से शुद्ध करना संभव है। मैंने एक ईमानदार साधक बनने और अपने जीवन में बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करने का प्रयास किया है। जैसा कि 'हृदय सूत्र' में मंत्र इंगित करता है, बुद्ध ने जो सिखाया उसे लागू करके हम स्वयं ज्ञानोदय की ओर अग्रसर हो सकते हैं। यह एक लक्ष्य है जिसे मैं पूरा करना चाहता हूं और ऐसा करने में सफल होने के लिए मैं बुद्ध का आशीर्वाद चाहता हूं।'

'हमारी विभिन्न परंपराओं में कुछ अंतर हो सकते हैं, पर महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सभी एक ही गुरु के शिष्य हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम एक-दूसरे के प्रति मैत्रीपूर्ण और सम्मानपूर्ण भाव रखें।'

'मैं हर दिन बोधिचित्त के जाग्रत मन और शून्यता की समझ विकसित करने का प्रयास करता हूं और मैं आपसे भी चित्त की एक परोपकारी अवस्था विकसित करने का प्रयास करने का आग्रह करता हूँ। मैं निम्नलिखित प्रार्थना से प्रेरित हूँ:

'जहाँ कहीं भी बुद्ध की शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ है
और जहाँ भी यह फैला है लेकिन घट गया है
क्या मैं अति करुणा से प्रेरित होकर स्पष्ट रूप से व्याख्या सकता हूं कि
यह खजाना सभी के लिए उत्कृष्ट लाभ और खुशी के लिए है।

'परिस्थितियां कैसी भी हों, हृदय को करुणामय बनाए रखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है।'

बौद्ध थाई-भारत समाज के महासचिव श्रद्धेय डॉ रत्नेश्वर चकमा ने अंत में घोषणा की कि :

'इस आदान-प्रदान कार्यक्रम के उद्घाटन में भाग लेने वाले सभी लोगों को धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। आज हमारे साथ जुड़ने के लिए मैं अतिथियों और विशेष रूप से परम पावन को धन्यवाद देता हूं। मैं आयोजकों और परम पावन दलाई लामा के कार्यालय को भी उनके समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूं।

❖ जागृत मन की व्याख्या-पहला दिन, दूसरा दिन और तीसरा दिन

२९ दिसंबर, २०२२, ३० दिसंबर, २०२२ और ३१ दिसंबर,२०२२

पहला दिन: बोधगया, बिहार, भारत।

बोधगया, बिहार, भारत। २९ दिसंबर की सुबह बोधगया में आकाश स्वच्छ नील रंग का है। इसी माहौल में परम पावन दलाई लामा गोल्फ कार्ट से कालचक्र मैदान के लिए निकले। इस दौरान वे मुस्कुरा रहे थे और सड़क के

दोनों ओर एकत्रित शुभचिंतकों का हाथ हिलाकर अभिवादन कर रहे थे। मंच के सामने गोल्फ कार्ट से नीचे उतरते हुए उन्होंने अपनी आदत के अनुसार आगे और अपने दाएँ और बाएं खड़ी भीड़ को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। फिर उन्होंने मुड़कर शाक्य गोंगमा त्रिचेन, गदेन ठि रिनपोछे, साथ ही शरपा और जंगचे छोजे का अभिवादन किया। इसके बाद उन्होंने सिंहासन पर अपना आसन ग्रहण करने से पहले शाक्य त्रिज़िनों को भी नमस्कार किया।

परम पावन ने घोषणा की 'आज, इस विशेष स्थान पर, जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था, मैं बोधिचित्तोत्पाद और बोधिसत्व संवर लेने के लिए एक समारोह आयोजित करना चाहूँगा। यह, ज्ञान प्राप्ति का आसनबुद्ध से जुड़े स्थलों में सबसे पवित्र है। उन्होंने चार आर्य सत्य और ज्ञान के सैंतीस सामंजस्य की शिक्षा कहीं और दी।लेकिन यहाँ हमें उनकी सभी शिक्षाओं के सार की याद दिलाई जाती है, जो कि आकाश जैसे विस्तृत क्षेत्र में स्थित प्राणियों के लाभ के लिए मन को अनुशासित करता है।

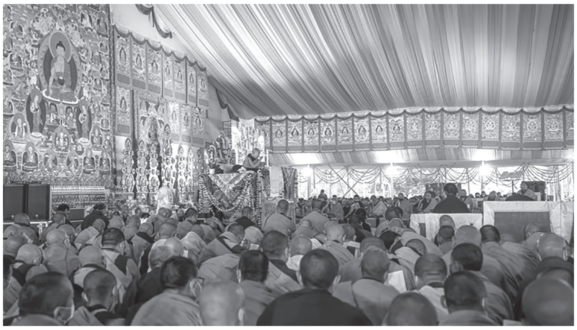

'मैं प्रतिदिन अपने अंदर बोधिचित्त का सृजन करता हूं। दूसरों के कल्याण के लिए चिंतन करता हूं। जितना अधिक आप इस तरह की प्रेरणा से परिचित होंगे, उतना ही आप पाएंगे कि आप दूसरों को अपने से अधिक प्रिय मानते हैं। इस तरह आप स्वयं को महसूस करेंगे कि सभी प्राणी अन्योन्याश्रित हैं।

परम पावन ने व्याख्यान प्रारंभ करते हुए कहा कि बुद्ध को सामने कैसे देखा जाए। उन्हें याद दिलाया गया कि कुछ दिनों पहले वाट-पा थाई मंदिर में उन्होंने दीवार पर बुद्ध की एक पेंटिंग देखी थी। उन्होंने खुलासा किया कि पाली-संस्कृत अंतरराष्ट्रीय भिक्षु आदान-प्रदान कार्यकम के उद्घाटन के दौरान उन्होंने महसूस किया जैसे बुद्ध अनुमोदन में उनका सिर सहला रहे थे और उन्हें चॉकलेट देकर पुरस्कृत कर रहे थे। ज्ञातव्य है कि इस कार्यक्रम में पाली और संस्कृत बौद्ध परंपराओं के भिक्षु अपने अनुभव का आदान-प्रदान करेंगे और एक-दूसरे की परंपराओं को बेहतर तरीके से जानेंगे। उन्होंने आगे कहा कि यदि हम बुद्ध द्वारा सिखाई गई शिक्षाओं की साधना करते हैं तो हमें मानना चाहिए कि इससे भगवान बुद्ध प्रसन्न होंगे।

उन्होंने कहा,'साधना के माध्यम से आप शिक्षाओं के वास्तविक सुगंध का रसास्वादन कर सकते हैं। बुद्ध ने स्वयं बोधिचित्त का विकास किया, स्वयं बोधिसत्व की साधना में लगे रहे और एक पूर्ण जागृत प्राणी बन गए। हमें चिंतन करना चाहिए, 'जैसे बुद्ध ने हमसे पहले किया है, वैसे ही मैं इस लक्ष्य को प्राप्त करूंगा।' बुद्ध हमें निराश नहीं करेंगे। उन्होंने चार आर्य सत्यों के साथ-साथ प्रज्ञा पारमिता की भी शिक्षा दी है। हमारे लिए महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि हम अपने अनियंत्रित चित्त को बुद्ध के चित्त में परिवर्तित करें।

'बुद्ध की शिक्षाओं को सुनें और उनका अध्ययन करें। उन पर बार-बार चिंतन करें, फिर जो आपने समझा है उस पर मनन करें। इसके साथ ही दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए संकल्पित रहें। इस तरह आप ज्ञानियों के क्षेत्र में पहुँच जाएंगे। यदि आपके भीतर बोधिचित्त है तो आप शांति में रहेंगे।'

परम पावन ने फिर से अपने श्रोताओं को सलाह दी कि वे अपने सामने बुद्ध के साथ भारत और तिब्बत के महान बौद्ध आचार्यों की उपस्थिति की कल्पना करें।

उन्होंने कहा,'हम सभी इंसान हैं, हम शिक्षाओं से मिले हैं, हम जहां भी हों हम सभी संवेदनशील प्राणियों के लिए काम करने का दृढ़ संकल्प कर सकते हैं।'

दूसरा दिन: बोधगया, बिहार, भारत।

परम पावन ने नागार्जुन की 'बोधिचित्त पर भाष्य' के श्लोक- ५७ के साथ अपना व्याख्यान फिर से शुरू किया। इसमें बताया गया है कि जिस तरह मिठास गुड़ का स्वभाव है और गर्मी अग्नि का स्वभाव है, उसी तरह सभी घटनाओं की प्रकृति शून्यता है। उन्होंने कहा कि हम सभी में बुद्ध-स्वभाव है। हम मनुष्य हैं जिन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं का अनुभव किया है और हमारे पास अपनी समझ का विस्तार करके अपने चित्त को वश में करने का अवसर और संसाधन है।

अपनी व्याख्या को आगे बढ़ाते हुए परम पावन ने कहा कि शून्यता की बात करना न तो शून्यवाद और न ही शाश्वतता को प्रतिपादित करना है। उन्होंने आगे कहा कि जब परम सत्य की व्याख्या की जाती है तो रूढ़ि बाधित नहीं होती है, लेकिन ऐसा कोई परम सत्य नहीं पाया जा सकता है जो रूढ़ि से स्वतंत्र हो।

परम पावन ने उल्लेख किया कि बौद्ध परंपरा में शास्त्र और उसका अहसास प्राप्त करना शामिल हैं और इसे अध्ययन और साधना के माध्यम से जीवित रखा जाता है। इसमें नैतिकता, एकाग्रता और प्रज्ञा के तीन उच्च प्रशिक्षण शामिल हैं। दार्शनिक कथनों के अलावा अहसास के लिए मन की कार्यप्रणाली के ज्ञान की भी आवश्यकता होती है। श्वेताभ दृश्य, लाली वृद्धि और निर्वाण के समय काला के साथ ही तीन रिक्तियों के माध्यम से मृत्यु के स्पष्ट प्रकाश की सूक्ष्म स्पष्टता और जागरूकता का प्रतिनिधित्व करनेवाले मन के साथ दैनिक साक्षात्कार के माध्यम से हम अंततः काल्पनिक शरीर का आभास करते हुए 'पूर्ण शून्य' की अवस्था में पहुंचने की आशा करते हैं।

परम पावन ने अपने व्याख्यान का समापन करते हुए, कहा, 'सभी दुख अज्ञान से आते हैं, यही वह है जिसे समाप्त किया जाना है। और हम ऐसा कारणों के राजा प्रतीत्य समुत्पाद, को समझकर कर सकते हैं। मैंने अपने इस व्याख्यान में यही कहने की कोशिश की है।

मध्याह्न भोजनोपरांत बिहार के मुख्यमंत्री माननीय नीतीश कुमार ने परम पावन से मुलाकात की और दोनों ने प्राचीन भारतीय ज्ञान और संस्कृति के मूल्य के महत्व पर चर्चा की।

तीसरा दिन: बोधगया, बिहार, भारत।

३१ दिसंबर की सुबह- सुबह कालचक्र मैदान में जैसे ही परम पावन दलाई लामा ने अपना आसन ग्रहण किया, भिक्षुओं और आम लोगों के एक समूह ने चीनी भाषा में 'हृदय सूत्र' का जाप करना शुरू कर दिया। सभी आगंतुकों को चाय और ब्रेड परोसी गई और इस दिन के संरक्षकों ने परम पावन को एक मंडल और सम्यक्त्व काय, वाक् और मन के त्रिगुणात्मक प्रतिनिधि की पेशकश की। इस अवसर पर परम पावन ने घोषणा की कि, 'यहां इस विशाल सभा की ओर से मुझे लोगों को आर्य तारा से संबंधित अनुमति देने का अनुरोध किया गया है। जैसा कि मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया है, यह एक विशेष स्थान है और सबसे महत्वपूर्ण चीज जो हम यहां कर सकते हैं वह है बोधिचित्त उत्पन्न करना, स्वयं और दूसरों के हित में पूर्ण सम्यक्त्व प्राप्त करने की आकांक्षा रखना। इसी से हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं।

उन्होंने कहा, 'जब शांतरक्षित को तिब्बत में आमंत्रित किया गया था, तभी के तिब्बती धार्मिक राजाओं के समय से तिब्बती लोग बोधिचित्त की साधना कर रहे हैं। यदि आपका मन तनावमुक्त और शांत है तो बोधिचित्त के विकास के परिणामस्वरूप आप पाएंगे कि आप अच्छे स्वास्थ्य और अच्छी नींद का आनंद ले रहे हैं। आप दिन-रात खुश रहेंगे।'

'मैं आज २१ ताराओं की अनुमति देने जा रहा हूँ, जो रिनजंग ज्ञात और सुखा ज्ञात संग्रह में पाए जाते हैं। मैंने तिब्बत में तगदग रिनपोछे से रिनजंग ज्ञात प्राप्त किया। साथ ही कई अन्य अभिषेक और प्रसारण भी प्राप्त किए। मुझे उनसे सुखा ग्यात्स प्राप्त करना याद नहीं है, लेकिन क्याब्जे ठिजंग रिनपोछे ने मुझे निर्वासन में आने के बाद यह दिया था।'

परम पावन ने आगे कहा, 'जब मैं प्रारंभिक संस्कारों से गुज़र रहा हूं, कृपया आर्य तारा से प्रार्थना करें कि धर्म फले-फूले, लोग स्वस्थ हों और आचार्य और यहाँ एकत्रित लोग दीर्घायु हों। ध्यान रखें कि आप जितने लंबे समय तक जीवित रहेंगे, योग्यता अर्जित करने के आपके अवसर उतने ही अधिक होंगे। और तो और, चूंकि अवलोकितेश्वर मेरे सिर के मुकुट पर विराजमान हैं, आप सभी उनके साथ एक विशेष तादात्म्य महसूस करते हैं, जिसका अर्थ है कि आप जीवन के बाद भी उनकी देखभाल करेंगे।'

जब परम पावन ने औपचारिक रूप से अनुमति देना प्रारंभ किया, इसके साथ ही उन्होंने शिष्यों को प्रवचन के लिए अनुरोध करने का निर्देश दिया। उन्होंने टिप्पणी की कि उन्होंने पिछले दो दिनों में धर्म का सामान्य परिचय दिया था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि तिब्बती, मंगोलियाई, चीनी और हिमालयी क्षेत्रों के लोग पीढ़ियों से धर्म की साधना कर रहे हैं और फलस्वरूप कर्म संबंध में वे हमारे समान हैं।

प्रारंभ में शिष्यों को बोधिसत्व संवरों का अनुरोध करना था। परम पावन ने उन्हें सलाह दी कि वे अर्हत, आठ बोधिसत्वों- मंजुश्री, अवलोकितेश्वर, वज्रपाणि, मैत्रेय, क्षितिजगर्भ, आकाशगर्भ, सर्वनिवारनविशकंभिनी और समंतभद्र, महान भारतीय आचार्यों के सिरमौर छह आचार्यो- नागार्जुन, आर्यदेव, असंग, वसुबंधु, दिग्नाग और धर्मकीर्ति और दो सर्वोच्च आचार्यो- गुणप्रभा और शाक्यप्रभा के साथ अंतरिक्ष में बुद्ध की कल्पना करें।

इसके बाद, शिष्यों को आर्य तारा के शरीर का अनुरोध करना था। परम पावन ने पुष्टि की कि उन्होंने स्वयं को और सामने वाले देवता को उस रूप में देखा था और २१ ताराओं का उनके रंगों और विशेषताओं के साथ वर्णन किया।

आगे शिष्यों ने तारा की वाणी, तारा के मन और मंत्र का वरदान मांगा। अनुष्ठान का समापन धन्यवाद मंडल की भेंट के साथ हुआ।

परम पावन ने नागार्जुन की 'बोधिचित्त पर भाष्य' के श्लोक ६७ से अपने व्याख्यान को फिर से शुरू किया और टिप्पणी की कि हमें सच्चे अस्तित्व से चिपके रहने पर काबू पाने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक हम ज्ञान की बाधाओं को दूर नहीं कर लेते, हम सम्यक्त्व प्राप्त करने में असमर्थ होंगे।

जब साधक भव्य प्राणियों को कर्म और मानसिक वेदनाओं से अभिभूत देखते हैं, तो वे पहचान जाते हैं कि इन बाधाओं को मन से हटाया जा सकता है। वे इस बात को इंगित करते हैं कि वे भव्य प्राणियों को ऐसा करने में मदद कर सकते हैं और उन्हें मिली दया को चुकाने के लिए ऐसा करने का संकल्प लेते हैं। जैसा कि श्लोक १०५ स्पष्ट करता है, 'बोधिचित्त को महान वाहन का सर्वोच्च आदर्श कहा गया है, इसलिए एक दृढ़ प्रयास के साथ इस बोधिचित्त को उत्पन्न करें।' इसके बाद परम पावन ने ग्रंथ को अंतिम पुष्पिका तक पाठ किया।

उन्होंने कहा, 'हम यहां इस पवित्र स्थान पर एकत्र हुए हैं जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था और जो स्थान बाद में नागार्जुन और अन्य आचार्यों की उपस्थिति से कृतार्थ हुआ था। हम उनके निर्देशों को पूरा करके उन सभी के करीब आने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। अब, कृपया सभी प्राणियों के लाभ के लिए जो कुछ भी पुण्य कमाया गया है, उसे समर्पित करें।'

परम पावन का यह व्याख्यान सोंखापा के 'पथक्रम पर महान ग्रंथ' के अंत में की गई प्रार्थना के सस्वर पाठ के साथ समाप्त हुआ। इसमें जो श्लोक हैं, उनका भावार्थ इस प्रकार हैं :

जहां कहीं भी बुद्ध की शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ है
और जहाँ भी यह फैला है लेकिन घट गया है
मैं बड़ी करुणा से प्रेरित होकर स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि
यह खजाना सभी के लिए उत्कृष्ट लाभ और खुशी के लिए है।

परम पावन के मंच छोड़ने और सभा के विसर्जित होने से पहले इस व्याख्यान शृंखला का आयोजन करने वाले दलाई लामा ट्रस्ट के सचिव जमफेल ल्हुंडरूप ने कार्यक्रम में हुए आय और व्यय का तिब्बती में विवरण दिया। उन्होंने परम पावन को उनके व्याख्यान के लिए धन्यवाद दिया और स्थानीय अधिकारियों के प्रति उनके समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया। जुमचुंग ताशी ने फिर अंग्रेजी में धन्यवाद ज्ञापन का सार-संक्षेप दोहराया।

इसके बाद परम पावन अपने चिर परिचित अंदाज में भीड़ का अभिनन्दन करने के लिए मंच के सामने आए और फिर गदेन फेलज्ञेलिंग महाविहार में लौटने के लिए गोल्फ कार्ट में सवार होने से पहले सबसे वरिष्ठ लामाओं के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। इसके बाद वे मुस्कुराते हुए और रास्ते में शुभचिंतकों का अभिनन्दन करते हुए आगे बढ़ गए।

❖ अमेरिकी सांसदों ने तिब्बत में चीन के आवासीय स्कूलों की संयुक्त राष्ट्र जांच की मांग की

०३ दिसम्बर, २०२२

धर्मशाला। अमेरिका के दो सांसदों ने तिब्बत में बच्चों को उनके माता-पिता से जबरन अलग कर चीन द्वारा बनाए गए आवासीय स्कूलों में रखने वाली रिपोर्ट की जांच संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के मानवाधिकार उच्चायुक्त से कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि ये मामले गंभीर मानवाधिकारों के उल्लंघन और सांस्कृतिक और भाषाई क्षरण के हैं।

चीन पर द्विदलीय-द्विसदनीय कांग्रेस कार्यकारी आयोग (सीईसीसी) के अध्यक्ष सीनेटर जेफ मर्कले और उपाध्यक्ष प्रतिनिधि सभा के सदस्य जिम मैकगवर्न ने मानवाधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क को भेजे गए एक पत्र में चीन की स्थिति पर रिपोर्ट का हवाला दिया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन सरकार तिब्बत क्षेत्र में आवासीय स्कूल चलाती है, जहां लगभग ८० प्रतिशत तिब्बती बच्चों को उनके अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है और वहां के 'अत्यधिक राजनीतिक पाठ्यक्रम' के तहत उनकी तिब्बती पहचान पर संकट मंडरा रहा है।

तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट की २०२१ की रिपोर्ट के आधार पर अमेरिकी सांसदों ने कहा कि 'औपनिवेशिक आवासीय स्कूलों' में ६ से १८ वर्ष की आयु के बच्चों को उनके माता-पिता से अलग कर डाल देना, बच्चों को इकट्ठा करके तिब्बती भाषा का मंदारिन चीनी आधारित पाठ्यक्रम में शामिल कर 'चीनीकरण' करना चीन की नीति का अभिन्न अंग है। चीन में कहीं और रहने वाले छात्रों की तुलना

में इन स्कूलों में रहने वाले तिब्बती बच्चों की बड़ी संख्या से चीनी नीति की भेदभावपूर्ण प्रकृति स्पष्ट होती है।

तिब्बती माता-पिता को भी अक्सर अपने बच्चों को इन स्कूलों में भेजने के लिए मजबूर किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप उनके परिवारों से अलग होने, कठोर रहने और धमकाने के कारण अपने बच्चों के लिए 'मानसिक और भावनात्मक संकट' होता है। सांसदों ने कहा कि 'यह अपनी पारिवारिक इकाई की अखंडता को बनाए रखने और अपने बच्चों के शैक्षिक मार्ग को चुनने के माता-पिता के अधिकार में हस्तक्षेप करता है।'

मर्कले और मैकगवर्न ने लिखा है, 'चीन ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में किए वादों का सम्मान करने के अपने दायित्व का उल्लंघन किया है। इन सम्मेलनों में कहा गया है कि राज्य को सरकारी पक्ष के रूप में नागरिकों द्वारा अपने सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और अधिकारों का पालन करने में हस्तक्षेप नहीं करने की आवश्यकता है। यह अधिकार आंतरिक रूप से शिक्षा के अधिकार से जुड़ा हुआ है, जो व्यक्तियों और समुदायों को मूल्यों, धर्म, रीति-रिवाजों, भाषा और अन्य सांस्कृतिक संदर्भों को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने की अनुमति देता है।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रवक्ता तेनज़िन लेक्ष्ये ने समझाया कि तिब्बत में चीन के आवासीय स्कूल 'अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से तिब्बतियों को निशाना बनाते हैं और उनका शोषण करते हैं, जिन्हें जान-बूझकर अपनी मातृभाषा, संस्कृति और धर्म सीखने से काट दिया जाता है।' केंद्रीय तिब्बती प्रशासन संयुक्त राष्ट्र से तिब्बत में औपनिवेशिक आवासीय स्कूलों के माध्यम से तिब्बती बच्चों के जबरन पारिवारिक अलगाव की जांच करने की मांग के लिए अमेरिकी कांग्रेस को धन्यवाद देता है।

पत्र में उल्लेख किया गया है कि बाल अधिकारों के सम्मेलन द्वारा आवश्यक तौर पर यह सुनिश्चित करने को कहा गया है कि गैर-कानूनी हस्तक्षेप न करते हुए राष्ट्रीयता, नाम और पारिवारिक संबंधों सहित अपनी पहचान को संरक्षित करने के बच्चे के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए और 'जातीय, धार्मिक या भाषाई अल्पसंख्यकों' के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें अपनी भाषा का उपयोग करने का अधिकार होना चाहिए। सांसदों ने कहा कि इन सम्मेलनों के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेने के बाद भी चीन ऐसा न करके अपने इन दायित्वों का उल्लंघन कर रहा है।' नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय अनुबंध के एक हस्ताक्षरकर्ता के रूप में चीन की आवासीय स्कूल नीति अनुबंध के अनुच्छेद-१८ का उल्लंघन करती है, जिसके अनुसार राज्यों को अपने बच्चों को उनकी मान्यताओं के अनुसार नैतिक शिक्षा प्रदान करने के लिए माता-पिता की स्वतंत्रता का सम्मान करने की आवश्यकता होती है।

पत्र में संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त से अगले साल मार्च में आगामी मानवाधिकार परिषद में इसे चिंता के मुद्दे के रूप में शामिल करने की अपील की गई है। साथ ही साथ विशेष प्रतिवेदकों और विशेषज्ञों से आग्रह किया गया है कि वे तिब्बत के मानवाधिकार प्रभाव का आकलन करने और आवासीय विद्यालयों की जमीनी हकीकत का आकलन करने के लिएके लिए तिब्बत की यात्रा की अनुमति प्राप्त करें। अतीत में इस्तेमाल की गई ऐसी ही नीतियों के कारण स्वदेशी बच्चों के 'सांस्कृतिक संहार' के द्वारा उनकी पहचान को मिटा दिया गया और बदल दिया गया। इसे ध्यान में रखते हुए अमेरिकी कानून निर्माता ऐसी नीतियों को तिब्बत में लागू करने से रोकने के लिए दृढ़ हैं।

❖ सिनसिनाटी के मेयर आफताब पुरेवल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की अपनी पहली यात्रा की

०५ दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। परम पावन १४वें दलाई लामा के साथ महापौर बैठक के बाद आज ०५ दिसंबर को सिनसिनाटी के मेयर आफताब कर्मा सिंह पुरेवल निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीआईई) गए जहां उन्होंने अध्यक्ष खेनपो सोनम तेनफेल, उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग टेखंग और टीपीआईई की स्थायी समिति के सदस्यों से मुलाकात की।'

इसके बाद, उन्होंने कशाग सचिवालय का दौरा किया, जहां उन्होंने सिक्योंग पेन्पा छेरिंग के नेतृत्व वाले कशाग के साथ बातचीत की। इनमें शिक्षा कालोन थरलाम डोल्मा, सुरक्षा कालोन ग्यारी डोल्मा और सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग कालोन नोरज़िन डोल्मा शामिल थे।

इसके अलावा, मेयर पुरेवल ने ०५ दिसंबर २०२२ को द तिब्बत म्यूजियम, लाइब्रेरी ऑफ तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स (एलटीडब्ल्यूए) और पेटोएन स्कूल का दौरा किया।

इसके अलावा, मेयर पुरेवल ने ०५ दिसंबर २०२२ को द तिब्बत म्यूजियम, लाइब्रेरी ऑफ तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स (एलटीडब्ल्यूए) और पेटोएन स्कूल का दौरा किया।

इसके अलावा, मेयर पुरेवल ने ०५ दिसंबर २०२२ को गंगचेन किइशोंग के परिसर में तिब्बत संग्रहालय, लाइब्रेरी ऑफ तिब्बती वर्क्स एंड आर्काइव्स (एलटीडब्ल्यूए) और पेटोएन स्कूल का दौरा किया।

मेयर पुरेवल अमेरिका में सर्वोच्च रैंकिंग वाले निर्वाचित तिब्बती-अमेरिकी हैं।

❖ चीन में मानवाधिकारों की निगरानी के लिए जापानी संसदीय कॉकस गठित

०६ दिसंबर, २०२२

टोक्यो। तिब्बत, उग्युर और दक्षिण मंगोलिया की चीन से आजादी के समर्थक जापानी संसद के दोनों सदनों के सदस्य ०५ दिसंबर २०२२ को

संसद के सम्मेलन कक्ष में एकत्र हुए और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन की निगरानी के लिए एक सांसद कॉकस के गठन की घोषणा की। लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के कीजी फुरुया और हिरोमी मित्सुयबाशी कॉकस के क्रमश: अध्यक्ष और महासचिव चुने गए। इसके अलावा, जापानी थिंक टैंक इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल फंडामेंटल्सके योशिको सकुराई को कॉकस का सलाहकार नियुक्त किया गया।

०५ दिसंबर २०२२ की सुबह जापानी हाउस ऑफ काउंसिलर्स ने भी चीन द्वारा मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता के उल्लंघन की निंदा करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। प्रस्ताव में पूर्वी तुर्केस्तान, तिब्बत, दक्षिणी मंगोलिया, हांगकांग और अन्य क्षेत्रों में मानवाधिकारों की गंभीर स्थिति के बारे में गंभीर चिंता व्यक्त की गई।

सांसद केइजी फुरुया, मंत्री ताकाइची साने, शिमोमुरा हकुबुनऔर थिंक टैंक के निदेशक योशिको सकुराई ने बताया कि कैसे अंतरराष्ट्रीय समुदायों की निरंतर चुप्पी ने चीन को अपने लोगों और कब्जे वाले क्षेत्रों के लोगों पर अत्याचार करने के लिए उकसाया है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हम अंतरराष्ट्रीय मानदंडों की रक्षा करें और चीनी आधिपत्य और आक्रामक उकसावे के खिलाफ बोलें।

तिब्बत पर जापानी संसदीय समर्थक समूह के अध्यक्ष शिमोमुरा हकुबुन ने कॉकस के गठन का स्वागत किया और तिब्बत में हो रहे सांस्कृतिक संहार और चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए परम पावन दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा अपनाए गए शांतिपूर्ण दृष्टिकोण पर बात की।

प्रतिनिधि त्सेवांग ग्यालपो आर्य ने चीन के कब्जे वाले तिब्बत, उग्युर और दक्षिण मंगोलिया में मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच और कार्रवाई करने के लिए एक कॉकस बनाने के लिए सांसदों को धन्यवाद दिया। इसके अलावा, उन्होंने चीन द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन की निंदा करने के लिए एक प्रस्ताव पारित करने और जापानी सरकार से मामले पर स्पष्ट रुख और नीति अपनाने का आग्रह करने के लिए भी हाउस ऑफ काउंसिलर्स के सदस्यों को धन्यवाद दिया।

प्रतिनिधि आर्य ने सांसदों को 'तिब्बत पर सांसदों के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क – आईएनपीएटीके बारे में सूचित किया, जो इस साल जून में वाशिंगटन, डीसी में तिब्बत पर आठवें विश्व संसदीय सम्मेलन (डब्ल्यूपीसीटी) के दौरान पुनर्गठित हुआ था। आईएनपीएटीके उद्देश्य की मूल प्रति का जापानी अनुवाद सांसदों के बीच इस अनुरोध के साथ वितरित किया गया कि वे भी इस कॉकस में शामिल हों।

इस विषय पर बोलने के लिए आमंत्रित विशेष वक्ताओं में हार्वर्ड के विद्वान और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के पूर्व सिक्योंग डॉ. लोबसांग सांगेय, विश्व उग्युर कांग्रेस के डोल्कन ईसा,शिज़ुओका विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ओहनो अकीराऔर दक्षिण मंगोलिया कांग्रेस के डाइचिन ओल्हुनुद शामिल थे। उन्होंने अपने-अपने देशों में सीसीपी द्वारा मानव और धार्मिक स्वतंत्रता के घोर उल्लंघन पर बात की। उन्होंने स्वतंत्रता और न्याय के लिए अपने संघर्ष का समर्थन करने के लिए जापानी सांसदों को धन्यवाद दिया।

सत्र का संचालन करने वाले सांसद हिरोमी मित्सुबाशी ने बैठक में समर्थन और भागीदारी के लिए सांसदों, वक्ताओं, कर्मचारियों और मीडिया को धन्यवाद दिया।

❖ धर्मशाला में तिब्बतियों ने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किए जाने की ३३वीं वर्षगांठ मनाई

१० दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किए जाने की ३३वीं वर्षगांठ सीटीए अधिकारियों द्वारा थेगछेन छोएलिंग में आज १० दिसंबर, २०२२ कोमनाई गई।

इसमें कार्यवाहक मुख्य न्यायिक आयुक्त कर्मा दादुल, सिक्योंग पेन्पा छेरिंग, डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग, सुरक्षा कालोन डोल्मा ग्यारी, डीआईआईआर कालोन नोरज़िन डोल्मा, चुनाव और लोक सेवा आयुक्त वांगडू छेरिंग पेसुर, सांसद, आम जनता और सीटीए के सचिव और कर्मचारी शामिल थे।

उपस्थित अन्य लोगों में मुख्य अतिथि भारतीय संसद में लोकसभा के सदस्य जम्यांग छेरिंग नामग्याल, विशिष्ट अतिथि राज्यसभा के सदस्य और तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच के संयोजक श्री सुजीत कुमारऔर लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद के मुख्य कार्यकारी पार्षद (सीईसी) एवं लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद के पार्षद अधिवक्ता ताशी ग्यालसन शामिल थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सिक्योंग द्वारा तिब्बती राष्ट्रीय ध्वज फहराने और तिब्बती और भारतीय राष्ट्रीय गान के गायन के साथ हुई, जिसके बाद टीआईपीए कलाकारों द्वारा नोबेल शांति पुरस्कार गीत गाया गया।

अपने संबोधन मेंसिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने परम पावन दलाई लामा के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और २१वीं सदी में भी जब युद्ध और संघर्ष प्रबल हैं, उनके शांति के संदेश की प्रासंगिकता को दोहराया। उन्होंने कहा कि 'चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए अहिंसा की उनकी निरंतर वकालत के लिए परम पावन दलाई लामा को प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार परम पावन के रचनात्मक प्रयास और अंतरराष्ट्रीय संघर्ष समाधान, मानवाधिकारों के उल्लंघन और वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए नोबेल समिति द्वारा मान्यता का प्रतीक है।

'पिछली सदी के युद्ध और संघर्ष की तबाही से सबक सीखकर २१वीं सदी को संवाद और शांति की सदी में बदलने का प्रयास अभी तक साकार नहीं हुआ है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि परम पावन दलाई लामा की व्यापक दृष्टि पूरी मानवता के लिए प्रासंगिक और अपरिहार्य बनी हुई है।'

डिप्टी स्पीकर डोल्मा छेरिंग ने संसद के बयान को ध्यान में रखते हुए कहा कि आज दिन अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस भी है, जो दुनिया भर में मनाया जा रहा है। हालांकि, तिब्बत जैसे तानाशाही वाले देशों में लोग सबसे दमनकारी परिस्थितियों में पीड़ित होकर जी रहे हैं।

मुख्य अतिथि लद्दाख से सांसद जामयांग टी. नामग्याल ने अपने संबोधन में भाषा और संस्कृति के मामले में तिब्बतियों और लद्दाखियों के बीच समानता, विशेष रूप से परम पावन द्वारा विश्वास और विशिष्ट संस्कृति को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के लिए लद्दाखियों पर विश्वास किए जाने पर प्रकाश डाला। उन्होंने उत्तर-पूर्व क्षेत्र के मठों और स्कूलों में ६०% से अधिक आबादी वाले हिमालयी लोगों को शिक्षा प्रदान करने के लिए तिब्बती प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

विशिष्ट अतिथि सांसद श्री सुजीत कुमार ने इसी तरह तिब्बत के मुद्दे के प्रति अपनी मजबूत निष्ठा को व्यक्त किया। इसके साथ ही उन्होंने २००९में तिब्बत का दौरा करने वाले किसी व्यक्ति द्वारा देखे गए वहां हो रहे चीनी दमन के बारे में बताया और कहा कि यह दमन बाद के वर्षों में कई गुना बढ़ा ही है। उन्होंने सबसे सुशील और

सभ्य अतिथि होने के लिए तिब्बतियों की सराहना की और अनादिकाल से चली आ रही दोनों देशों की मित्रता की सराहना की।

पहाड़ी विकास परिषद के सदस्य ताशी ग्याल्तसन ने कहा कि लद्दाख ने परम पावन द्वारा उठाए गए मुद्दे की वकालत की है और लद्दाख स्वायत्त परिषद के मुख्य कार्यकारी पार्षद (सीईसी) ने परम पावन के दिल में एक विशेष स्थान बना लिया है और उन्हें आशा है कि परम पावन जल्द ही लद्दाख का दौरा करेंगे।

इस कार्यक्रम में जिग्मे टी. नामग्याल द्वारा टीआईपीए की यार्की संगीत शृंखला का विमोचन, सुजीत कुमार द्वारा तिब्बती औषधीय चिकित्सा पर डॉ. जिग्मे गेदुन की एक पुस्तक का विमोचनऔर २५ साल की सेवा के लिए मुख्य शी खांग के कर्मचारी केल्संग चोएडन का सम्मान भी किया गया।

बाद मेंसिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफए) द्वारा आयोजित २५ वें हिमालय उत्सव में भाग लिया, जो १९९५ से धर्मशाला में काम कर रहे तिब्बतियों और भारतीयों का एक संगठन है।हिमालय उत्सव के तहत १०-११ दिसंबर को दो दिवसीय उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें तिब्बती और भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

❖ कनाडा की संसद ने सर्वसम्मति से तिब्बत मुद्दे के समाधान के लिए प्रस्तावित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन करने वाला प्रस्ताव पारित किया

स्टाफ रिपोर्टर, १५ दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। कनाडा के हाउस ऑफ कांमंस ने बुधवार को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें तिब्बत मुद्दे के समाधान के लिए प्रस्तावित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन किया गया और तिब्बती प्रतिनिधियों और चीनी सरकार के बीच बातचीत फिर से शुरू करने का समर्थन किया गया।

यह प्रस्ताव पहली बार सदन में मंगलवार को सांसद गार्नेट जेनुइस द्वारा पेश किया गया था, जो एक कट्टर तिब्बत समर्थक हैं।गार्नेट जेनुइस की तिब्बत के प्रति गहरी चिंता और तिब्बतियों की मदद करने के दृढ़ संकल्प ने सदन को तिब्बतियों को वास्तविक स्वायत्तता प्रदान करने के लिए कनाडा सरकार से सक्रिय कार्रवाई करने के लिए अपने मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के प्रस्ताव से सहमत होने के लिए राजी किया।

सदन द्वारा प्रस्ताव का समर्थन करने के अपने निर्णय की घोषणा करने के बादसांसद गार्नेट ने जीत को इस रूप में ट्वीट किया, 'कनाडा की संसद ने सर्वसम्मति से चीनी संविधान के ढांचे के भीतर तिब्बत के लिए वास्तविक स्वायत्तता देनेवाले मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए मेरा प्रस्ताव पारित किया। तिब्बती समुदाय को उनके नेतृत्व और हिमायत के लिए धन्यवाद।'

इस तरह के प्रस्ताव का सर्वसम्मत पारित होना तिब्बत की ताज में जोड़ा गया एक और पंख है जो तिब्बती लोगों के संघर्ष के लिए बड़े लाभ के रूप में काम करेगा।

गार्नेट जेनुइस का ट्वीट

'कनाडा की संसद ने सर्वसम्मति से चीनी संविधान के ढांचे के भीतर तिब्बतके लिए वास्तविक स्वायत्तता देनेवाले मध्यम मार्ग दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए मेरा प्रस्ताव पारित किया। तिब्बती समुदाय को उनके नेतृत्व और हिमायत के लिए धन्यवाद।'

❖ सिक्योंग ने राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक सह संगोष्ठी के उद्घाटन को संबोधित किया

१७ दिसंबर, २०२२

जम्मू। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने जम्मू में जम्मू विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन विभाग के सहयोग से भारत-तिब्बत संघ द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सह संगोष्ठी के उद्घाटन में भाग लिया।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित सिक्योंग और भारत-तिब्बत संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) नीलेंदर कुमार ने लगभग २० मीडिया घरानों के पत्रकारों के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की। दोनों ने अरुणाचल प्रदेश में सीमा पर चीन की हालिया घुसपैठ पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए और मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए भारत की सुरक्षा पर अपनी चिंता व्यक्त की।

सम्मेलन में एशिया के दो दिग्गजों के बीच हाल ही में सीमा संघर्ष की रिपोर्टों पर विचार-विमर्श किया गया।

अपने संबोधन में सिक्योंग ने तिब्बत की तथ्यात्मक ऐतिहासिक स्थिति की गलत व्याख्या करते हुए चीन के व्यापक और चालाकी भरे प्रचारों के बारे में सभा को विस्तार से बताया और परम पावन दलाई लामा द्वारा चीन-तिब्बत संघर्ष को हल करने के लिए दोनों पक्षों की जीत वाली व्यावहारिक समाधान के रूप में परिकल्पित मध्यम मार्ग दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। उन्होंने देवनागरी से तिब्बती लिपियों की व्युत्पत्ति और परिणामस्वरूप भारत से निकले बौद्ध धर्म को अपनाने का उल्लेख करते हुए तिब्बत को प्राचीन भारतीय परंपराओं के भंडार के रूप में रेखांकित किया और चीन द्वारा तिब्बत को अपना अभिन्न अंग बताने के निरंतर दावे को खारिज कर दिया। उन्होंने युवा तिब्बतियों को उनकी परंपराओं से अलग करने के लिए तिब्बत के अंदर औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूलों की शुरुआत के माध्यम से तिब्बतियों के मानवाधिकारों और सांस्कृतिक पहलुओं के प्रति चीन के दुर्व्यवहार से अवगत कराया। इसके साथ ही अन्य मुद्दों के अलावा तिब्बतियों को रोकने के लिए ग्रिड-लॉक सिस्टम के कार्यान्वयन, डीएनए नमूनों का संग्रह और असंतुष्टों का सर्वेक्षण करने के लिए आईरिस की स्कैनिंग के बारे में भी सभा को बताया।

इसके अलावा, उन्होंने चीनी सरकार द्वारा बड़ी संख्या में बांध निर्माण कर और नदियों की धारा को मोड़कर तिब्बत के अंदर जल संसाधनों के कुप्रबंधन की ओर इशारा किया। चीन के इस कृत्य से तिब्बत के भीतर के तिब्बतियों के साथ-साथ नदी तट के देशों के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। इसके अलावा, तिब्बती पठार को भूकंपीय संवेदनशील क्षेत्र बनाने वाले तिब्बत के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र और विवर्तनिक संयोजन के ऊपर इसके स्थान को देखते हुए हिमालय और भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक जलवायु परिस्थितियों पर इसका प्रभाव को भी देखा जा सकता है।

इसी तरह, उन्होंने सतर्क किया कि चीन का खतरा उसके सभी पड़ोसी देशों और बड़े पैमाने पर सभी लोकतांत्रिक देशों तक फैला हुआ है। साथ ही उन्होंने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को सहमत करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों का आग्रह किया, जिसे उन्होंने पश्चिम में बार-बार दोहराया

है। सिक्योंग ने दुनिया भर की सरकारों से अपील की कि वे सभी के लाभ के लिए परम पावन दलाई लामा या उनके प्रतिनिधि के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के बातचीत के लिए बीजिंग पर दबाव डालें।उन्होंने यह भी कहा कि तिब्बत पर शासन करने की वैधता बीजिंग की सरकार को केवल परम पावन और तिब्बती लोग ही प्रदान कर सकते हैं और कोई नहीं।

अपनी बात समाप्त करने से पहलेसिक्योंग ने भारत-तिब्बत संघ की बैठक के आयोजन और तिब्बत के सभी समर्थकों को उनके अटूट समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम को मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) नीलेंदर कुमार, सौरभ सरस्वती (राष्ट्रीय महासचिव, भारत-तिब्बत संघ), डॉ राजेश शर्मा (बौद्ध अध्ययन विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय), प्रो. रामनंदन सिंह (केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर, लखनऊ स्थित बौद्ध दर्शन और पाली विभाग के अध्यक्ष), कुलदीप शर्मा (क्षेत्रीय संयोजक, भारत-तिब्बत संघ) और प्रोफेसर नरेश पाधा (डीन अकादमिक मामले) और अन्य वक्ताओं ने भी संबोधित किया।)।

उद्घाटन सत्र के समापन के बादविभिन्न भारतीय मीडिया संस्थानों द्वारा सिक्योंग का साक्षात्कार लिया गया और विश्वविद्यालय के लद्दाखी छात्रों के साथ संक्षिप्त बातचीत की गई।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सह संगोष्ठी में भाग लेने वालों में अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू- कश्मीर, लद्दाख, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम और उत्तराखंड के भारत-तिब्बत संघ के सदस्य, छात्रों और विश्वविद्यालय के छात्र और शिक्षक तथा अन्य लोग शामिल रहे।

❖ तिब्बत के अंदर बड़े पैमाने पर डीएनए संग्रह में भागीदारी की पूछताछ के लिए थर्मोफिशर साइंटिफिक को सीईसीसीने पत्र लिखा

१९ दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र में चीनी पुलिस द्वारा थर्मोफिशर साइंटिफिक से डीएनए किट और सीक्वेंसर की बड़ी मात्रा में खरीद से चिंतित चीन पर कांग्रेस-कार्यकारी आयोग (सीईसीसी) में शामिल अमेरिका के दोनों दलों के आयुक्तों ने थर्मोफिशर साइंटिफिक के सीईओ मार्क कैस्पर को पत्र लिखकर जानकारी मांगी है। ज्ञातव्य है कि थर्मोफिशर साइंटिफिक वैज्ञानिक उपकरणों का अमेरिकी आपूर्तिकर्ता है। यह तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में पुलिस को अपनी कंपनी के ज्ञान/भागीदारी की जांच करने के लिए डीएनए सीक्वेंसर की आपूर्ति करता है। टीआरए में पुलिस को तिब्बतियों के डीएनए नमूनों के जबरन सामूहिक संग्रह के लिएतैनात किया गया है। इस अभियान के तहत पुलिस द्वारा तिब्बतियों का क्रूर दमन किया जाता है।

१५दिसंबर के पत्र में सीईसीसीने टोरंटो स्थित सिटीजन लैब और ह्यूमन राइट्स वॉच की रिपोर्ट प्रदान की जिसमें बड़े पैमाने पर निगरानी की एक प्रणाली स्थापित करने के लिए तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान में डीएनए के व्यवस्थित-द्रव्यमान संग्रह को दर्शाया गया है। थर्मोफिशर द्वारा चीन को इसकी बिक्री पर प्रतिबंध लगाने पर विचार करने का अनुरोध करने वाले पत्र पर सीनेटर जेफरी ए. मर्कले (अध्यक्ष), प्रतिनिधि जेम्स पी. मैकगवर्न (उपाध्यक्ष), सीनेटर मार्को रूबियो (रैंकिंग सदस्य) और प्रतिनिधि क्रिस्टोफर एच. स्मिथ (रैंकिंग सदस्य) ने हस्ताक्षर किए हैं।

❖ दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए शिक्षा विभाग की एक सप्ताह की नेतृत्व कार्यशाला

२१ दिसम्बर, २०२२

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का शिक्षा विभाग दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए २१ से २७ दिसंबर तक सप्ताह भर चलने वाली नेतृत्व कार्यशाला का आयोजन कर रहा है।

सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की और पारंपरिक शैक्षणिक अनुभाग प्रमुख, अतिरिक्त सचिव तेनज़िन दोरजी, उप सचिव न्गोडुप तेनपा, संयुक्त सचिव जामयांग वांग्याल और अन्य संबंधित कर्मचारियों ने इसमें भाग लिया।

अतिरिक्त सचिव तेनज़िन दोरजी ने कार्यशाला में आए सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और परिचयात्मक भाषण दिया। उन्होंने कहा कि कार्यशाला २ साल के कोविड प्रतिबंधों के बाद हो रही थी और कहा कि यह कार्यक्रम बुनियादी शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में कुल २७ स्कूल और ११४ विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

छात्रों को अपने संबोधन में सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने उल्लेख किया कि इस बस्ती-के दौरे में उन्होंने धर्मशाला के अलावा अधिकांश स्कूलों में गए थे और वह इस कार्यशाला के माध्यम से सभी स्कूलों से संपर्क रखने की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने छात्रों से कार्यक्रम की व्यवस्था का अध्ययन करने और आयोजकों को उनकी भविष्य की ऐसी कार्यशालाओं की योजना बनाने में मदद करने के लिए अपनी प्रतिक्रिया देने का आग्रह किया।

उन्होंने तिब्बतियों को स्थानीय लोगों के साथ सद्भाव बनाकर रहने के लिए याद दिलाया। साथ ही उन्होंने छात्रों से तिब्बती समुदाय की स्थितियों में सुधार करने में रुचि रखनेवाले प्रायोजकों द्वारा आयोजित की जानेवाली ऐसी कार्यशालाओं का अधिकतम लाभ उठाने की अपील की।

उन्होंने अपने इतिहास को जानने के महत्व को भी दोहराया और उस पूरे वृतांत को दोहराया कि किस तरह से तिब्बत में भारी दवाब के बीच तिब्बतियों को भागकर भारत जाना पड़ा था। उन्होंने बताया कि कैसे निर्वासन में आनेवाली तिब्बतियों की पहली पीढ़ी भारत के अत्यधिक गर्म और उमस भरे मौसम में सड़क निर्माण मजदूरों के रूप में काम कर रही थी, जिसके कारण इस पीढ़ी के तिब्बती काफी आराम में रह रहे हैं। उन्होंने छात्रों को तिब्बती इतिहास, लोकतंत्र के विकास, तिब्बत की जलवायु और पर्यावरण के बारे में भी बताया, जिनपर विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।

छात्रों की आबादी का एक डेटाबेस और व्यवस्थित रिकॉर्ड रखने के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि स्कूलों को बेहतर ढंग से संचालित करने के लिए यह आवश्यक है।

इसके बाद उप सचिव न्गोडुप तेनपा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यशाला पहला सत्र 'भविष्य के तिब्बत के नेता' था, जिसमें सिक्योंग अतिथि वक्ता थे। इसकेबाद 'मानकीकृत शर्तें', 'तिब्बत के पर्यावरण का महत्व', 'तिब्बती लोकतंत्र का विकास', 'धर्मनिरपेक्ष नैतिकता', 'तिब्बत पर चीन की नीति' और 'सीटीए का परिचय' से संबंधित सत्र हुए। इसके बाद सीटीए विभागों का दौरा कराया गया।

❖ सिक्योंग ने 'फ्लेम ऑफ होप' के कार्यकर्ताओं के समूह से मुलाकात की

३० दिसंबर, २०२२

बोधगया। सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने ३० दिसंबर को जापान के अर्थ कारवां संगठन के माध्यम से 'फ्लेम ऑफ होप' नामक संगठन के कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और बातचीत की। 'फ्लेम ऑफ होप' के आठ कार्यकर्ताओं के साथ अपनी बातचीत मेंसिक्योंग ने परम पावन दलाई लामा द्वारा परिकल्पित धर्मनिरपेक्ष नैतिकता और इसके लक्ष्यों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया। इसके अलावाउन्होंने कहा कि वर्तमान में यह दुनिया भर के स्कूलों और शैक्षिक केंद्रों में पढ़ाया जा रहा है। इसी तरह, उन्होंने जापानी शिक्षा संस्थानों में सी लर्निंग का अनुवाद करने और पढ़ाने की सिफारिश की।

सिक्योंग ने संक्षेप में परम पावन दलाई लामा के नेतृत्व में निर्वासन में तिब्बतियों के आगमन, बस्तियों और स्कूलों की स्थापना, लोकतंत्र का विकास, लोकतंत्र के तीन स्तंभों के महत्व और इसकी जिम्मेदारी और शक्तियों के बारे में बताया।इसके बाद उन्होंने एक शांतिपूर्ण दुनिया के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

'फ्लेम ऑफ़ होप' के कार्यकर्ताओं ने अपने संगठन के उद्देश्यों के बारे में सिक्योंग को अवगत कराया और इस पर परम पावन दलाई लामा के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए उनके सुने प्रवचनों के बारे में अपना अनुभव सुनाया।

'फ्लेम ऑफ होप' की स्थापना १९४५ के अगस्त में हिरोशिमा पर अणु बम गिराए जाने से उत्पन्न विनाश के बाद हुई थी। 'फ्लेम ऑफ होप' की पहल सेयह आशा की जाती है कि यह दुनिया भर में शांति का संदेश फैलाएगा।

❖ स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने छात्रों को तिब्बती लोकतांत्रिक व्यवस्था के विकास के बारे में बताया

२२ दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। आज २२ दिसंबर की सुबह १७वीं निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेनपो सोनम तेनफेल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के शिक्षा विभाग द्वारा धर्मशाला के पास के प्रशासनिक प्रशिक्षण केंद्र में दसवीं कक्षा के छात्रों के लिए आयोजित नेतृत्व कार्यशाला में तिब्बती लोकतांत्रिक राजनीति के विकास के बारे में जानकारी दी।

भारत और नेपाल के २७ तिब्बती स्कूलों के कुल ११४ छात्रों की कार्यशाला में बोलते हुए स्पीकर ने लोकतंत्र शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए अपने व्याख्यान की शुरुआत की। उन्होंने बताया कि लोकतंत्र का अंग्रेजी मूल डेमोक्रेसी शब्द ग्रीक शब्द 'डेमोस' और 'क्रेटोस' के मिलने से वियुत्पन्न हुआ है। 'डेमोस' का अर्थ है लोग और 'क्रेटोस' काअर्थ शक्ति होता है। इसी तरह, उन्होंने तिब्बती में सबसे उपयुक्त शब्द की ओर इशारा किया जो अंग्रेजी में लोकतंत्र शब्द के सबसे करीब आता है। इसके बाद उन्होंने प्रत्यक्ष लोकतंत्र और प्रतिनिधि लोकतंत्र सहित विभिन्न प्रकार के लोकतंत्र की व्याख्या की। आगे उन्होंने आज की तारीख में लोकतंत्र के सामने उत्पन्न चुनौतियों को रेखांकित किया।

उन्होंने परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बत में प्रशासनिक और भूमि सुधार शुरू करने के लिए सुधार समिति के गठन से तिब्बती समाज में लोकतंत्र के विकास पर भी प्रकाश डाला। यह पहल लोकतंत्र की दिशा में एक कदम के रूप में थाजो आगामी वर्षों में तिब्बत पर पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के अवैध कब्जे के कारण बाधित हो गया।

अध्यक्ष ने परम पावन दलाई लामा द्वारा १९५६ में अपनी भारत यात्रा के दौरान भारतीय संसद के कामकाज पर और १९५४ में अपनी चीन यात्रा के दौरान चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के कांग्रेस पर की गई परस्पर विरोधी टिप्पणियों के बारे में बात की, जिसमें से लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले भारत ने परम पावन को एक न्यायपूर्ण समाज के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों को अपनाने के लिए बहुत प्रेरित किया।

इसी क्रम मेंअध्यक्ष ने १९६० में बोधगया के पवित्र स्थान पर एक शपथ वक्तव्य पर तिब्बत के तीन पारंपरिक प्रांतों और बौद्ध धर्म के चार धार्मिक संप्रदाय के प्रतिनिधियों द्वारा परम पावन दलाई लामा का सीधे-सीधे अनुसरण करने की शपथ लेने के बारे में बताया। उस समयपरम पावन ने तिब्बतियों को सलाह दी कि वे अपने-अपने प्रांतों से तीन प्रतिनिधियों का चुनाव करें और बौद्ध धर्म के चार संप्रदायों में से प्रत्येक से एक प्रतिनिधि चुनें। उन निर्वाचित प्रतिनिधियों ने उस वर्ष के २ सितंबर को निर्वासित तिब्बती संसद (तब इसका नाम कमीशन ऑफ तिब्बतन पीपुल्स डेप्युटीज रखा गया) के पहले निर्वाचित सदस्यों के रूप में शपथ ली और उस दिन के बाद से इसी तारीख को तिब्बती लोकतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

निर्वासित तिब्बती संसद की संरचना, अवधि और कामकाज में बदलाव की व्याख्या करते हुए, अध्यक्ष ने १९९१में निर्वासित तिब्बतियों के चार्टर को अपनाने की प्रक्रिया और निर्वासन में तिब्बती संसद की वर्तमान संरचना की व्याख्या की।निर्वासित तिब्बती संसद में वर्तमान में तिब्बत के तीन पारंपरिक प्रांतों यानी यू-त्सांग, धोतोए और धोमे में से प्रत्येक के १०-१० प्रतिनिधियों सहित कुल ४५सदस्य हैं। इनमें तिब्बती बौद्ध धर्म और पूर्व-बौद्ध बॉन धर्म के चार स्कूलों में से प्रत्येक से दो, उत्तरी अमेरिका और यूरोप से दो-दो, ऑस्ट्रेलिया से एक और एशिया से (भारत, नेपाल और भूटान को छोड़कर) एक सदस्य प्रत्येक तिब्बती समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निर्वासित तिब्बतियों के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में एक मील का पत्थर तब बना जब २००१ में कैबिनेट के पहले प्रमुख (कालोन त्रिपा) को सीधे तिब्बती लोगों द्वारा चुना गया। इसके बाद तिब्बत के इतिहास में सबसे बड़ा मील का पत्थर तब बना जब परम पावन ने दीर्घावधि में तिब्बतियों को लाभान्वित करने और तिब्बतियों के लिए पूर्ण लोकतंत्रीकरण प्रक्रिया का मार्ग प्रशस्त करने के लिए २०११ में अपने सभी राजनीतिक अधिकारों को निर्वाचित नेताओं (सिक्योंग) को सौंप दिया।

अध्यक्ष ने तीन स्तंभों यानी तिब्बती लोकतांत्रिक प्रणाली की संरचना की व्याख्या की। इनमें कार्यपालिका (कशाग), विधायी (तिब्बती संसद-निर्वासित) और न्यायपालिका (सर्वोच्च न्याय आयोग) को व्यवस्था पर नियंत्रण और संतुलन बनाने के लिए अलग-अलग शक्ति और उत्तरदायित्वों के साथ अधिकार दिया गया है। इसी तरह, स्वतंत्र और निष्पक्ष कामकाज के लिएतीन स्वायत्त निकायों- चुनाव आयोग, लोक सेवा आयोग और महालेखा परीक्षक के कार्यालय की भी स्थापना की गई है।

अंत में, छात्रों द्वारा उठाए गए सवालों और शंकाओं का जवाब देने से पहलेअध्यक्ष ने छात्रों से लोकतंत्र के वास्तविक पहलू को समझने के लिए कहा, जो कि दूसरों की स्वतंत्रता को बाधित किए बिना खुद के लिए स्वतंत्रता का अधिकार है। साथ ही उन्हें निर्वासन में मिले लोकतंत्र के इस अनमोल अधिकार का उपयोग करने में मेहनती होने की सलाह दी।

❖ डिप्टी स्पीकर ने भारत-तिब्बत मैत्री संघ के हिमालय महोत्सव में युवा पीढ़ी की भागीदारी को प्रोत्साहित किया

११ दिसंबर, २०२२

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किए जाने की स्मृति में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफए) की धर्मशाला शाखा द्वारा रविवार को आयोजित २६वें हिमालय महोत्सव के समापन समारोह में उपाध्यक्ष डोल्मा छेरिंग तेखांग ने भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कांगड़ा के अतिरिक्त उपायुक्त गंधर्व राठौड़ थे। उपस्थित विशिष्ट अतिथियों में धर्मशाला के मेयर ओंकार नेहरिया, आईटीएफए के अध्यक्ष अजीत नेहरिया, आईटीएफए के सलाहकार राम स्वरूप औरसांसद दावा छेरिंग शामिल थे।

उपाध्यक्ष ने परोपकारिता, प्रेम, करुणा और अहिंसा की सदियों पुरानी साझा विरासत से उपजी हिमालयी और तिब्बती लोगों के बीच विशेष संबंध पर बात की। उन्होंने परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किए जाने के महत्व पर प्रकाश डाला, जो परोपकारिता, प्रेम और करुणा के प्रतीक हैं।

डिप्टी स्पीकर ने चीन के दमनकारी शासन के तहत तिब्बत के अंदर देखी जा रही तिब्बतियों की भयानक पीड़ा को बयां किया और आईटीएफए को सांस्कृतिक और पारंपरिक पहलुओं से परे तिब्बत के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए सामूहिक प्रयास करने की सिफारिश की। उन्होंने युवा भारतीयों और तिब्बतियों को आईटीएफए की पुरानी पीढ़ी के सदस्यों की विरासत को आगे बढ़ाने के महत्व को दोहराते हुए आईटीएफए की गतिविधियों में युवा पीढ़ी की भागीदारी का आग्रह किया।

अंत में, डिप्टी स्पीकर ने एक अच्छे मुद्दे को लेकर बहुमूल्य योगदान देने के लिए हिमालयन फेस्टिवल के आयोजकों, प्रतिभागियों और प्रायोजकों की सराहना की और उन्हें धन्यवाद दिया।

❖ 'फ्री तिब्बत- ए वॉइस फ्रॉम असम' के नेतृत्व में 'सांगपो-सियांग- ब्रह्मपुत्र बचाओ' अभियान का मुद्दा नई दिल्ली में उठा

०२ दिसंबर, २०२२

गुवाहाटी, ०१ दिसंबर। असम के पर्यावरण कार्यकर्ताओं की एक टीम ने विश्व युवक केंद्र, नई दिल्ली में २८- २९ नवंबर २०२२ को आयोजित सातवें अखिल भारतीय तिब्बत समर्थक समूह सम्मेलन में 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' द्वारा शुरू 'सांगपो- सियांग- ब्रह्मपुत्र बचाओ' अभियान के बारे में जानकारी दी और इसपर चर्चा की।

नोवनीता शर्मा (समन्वयक, फ्री तिब्बत-ए वॉइस फ्रॉम असम), कृपा लोचन दास और जुगल हांडिक के नेतृत्व में इस टीम ने दो दिनों तक चलने वाले सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन में भारत के विभिन्न हिस्सों से १७ तिब्बत समर्थक समूहों ने हिस्सा लिया।

कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज-इंडिया द्वारा आयोजित और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) द्वारा प्रायोजित सम्मेलन में देश भर से २०० से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

फ्री तिब्बत-ए वॉइस फ्रॉम असम की नोवनीता शर्मा ने तिब्बत मुक्ति साधना के लिए अन्य महत्वपूर्ण आयामों के साथ-साथ 'सांगपो-सियांग-ब्रह्मपुत्र बचाओ' का मुद्दा भी उठाया।

उन्होंने इस अभियान के महत्व पर जोर देते हुए कहा, 'ब्रह्मपुत्र नदी के सामने आने वाले खतरे राष्ट्रीय महत्व के हैं जो तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हैं। ब्रह्मपुत्र और सियांग नदी की तबाही राष्ट्रीय संकट होगा।'

उन्होंने आगे कहा, 'माननीय सिक्योंग पेन्पा छेरिंग ने अपने भाषण में अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी के गंदे पानी का उल्लेख किया, जिसे उन्होंने हाल ही में पूर्वोत्तर भारत की अपनी यात्रा के दौरान देखा था।इसलिए, इस हिमालयी नदी को शोषण और पारिस्थितिक क्षति के हानिकारक चीनी मॉडल से बचाने के लिए प्रत्येक तिब्बत समर्थक को तिब्बत को मुक्त कराने के अभियान के साथ 'सांगपो-सियांग-ब्रह्मपुत्र बचाओ' अभियान चलाना चाहिए।

ट्रांस हिमालयी नदी यारलुंग त्सांगपो तिब्बत से निकलती है और अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी और असम में ब्रह्मपुत्र नदी के नाम से भारत के लंबे क्षेत्र में बहती है। 'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' ने इस नदी के साथ चीन द्वारा छेड़छाड़ और शोषण का सदियों पुराना मुद्दाराष्ट्रीय स्तर पर पहली बार सामने लाया है।

यह अंतरराष्ट्रीय नदी अंततः बांग्लादेश में बंगाल की खाड़ी में गिरती है।एशिया के जिस क्षेत्र से होकर यह नदी बहती है, वह सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है और यहां के लाखों लोगों की भोजन और आजीविका सुरक्षा इस नदी पर निर्भर करती है। कम्यूनिस्ट चीन द्वारा यारलुंग त्सांगपो पर बनाए जा रहे विशालकाय बांधों और दक्षिण से उत्तर की ओर जलधारा मोड़ने की विवादास्पद परियोजना का पहली बार इस 'त्सांगपो -सियांग-ब्रह्मपुत्र बचाओ'अभियान द्वारा विरोध किया जा रहा है।

'फ्री तिब्बत- ए वॉयस फ्रॉम असम' तिब्बत पठार में कम्यूनिस्ट चीन के दमनकारी शासन से तिब्बत की आजादी के लिए असम में एक जन आंदोलन खड़ा कर रहा है। ब्रह्मपुत्र नदी असम की आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक जीवन रेखा है जो अरुणाचल प्रदेश के तूतिंग से भारत में प्रवेश करती है।

यह नदी तिब्बत में यारलुंग घाटी, अरुणाचल प्रदेश में सियांग घाटी और असम में ब्रह्मपुत्र घाटी के लोगों को एशिया की सबसे समृद्ध समग्र सभ्यताओं में से एक के साथ जोड़ती है। यह क्षेत्र आश्चर्यजनक जातीय, भौगोलिक, पारिस्थितिक विविधता से भरा पड़ा है।

यह विविधता इस सभ्यता के अनूठे सांस्कृतिक ताने-बाने में झलकती है। तिब्बत में शोषक कम्युनिस्ट चीनी शासन इस सभ्यता के भविष्य के अस्तित्व पर सवाल खड़ा करता है। पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की रणनीति में यारलुंग त्सांगपो पर विनाशकारी बड़े बांध समेत राक्षसी जल- विद्युत परियोजना शामिल हैं, जो थ्री गोरजेस डैम के आकार और उसकी विशालता से खत्म करने की कल्पना की गई है। यारलुंग त्सांगपो पर बड़ी संख्या बांध और इसके साथ बने विशालकाय जलाशयजब पूरी तरह से तैयार हो जाएंगे, तो नीचे के इलाके के देशों के लाखों लोगों के लिए जल बम के रूप में कार्य करेंगे।

रिपोर्ट और उपलब्ध आंकड़े बताते हैं कि चीनी सरकार दक्षिण से उत्तर की ओर जल प्रवाह को मोड़ने की विवादास्पद परियोजना को लागू करने के बहुत करीब है।इसके तहत चीन के औद्योगिक परिक्षेत्रों में आपूति के लिए यारलुंग त्सांगपो से जल को मुख्य भूमि चीन में बहने वाली उत्तरी नदियों में स्थानांतरित करने की योजना है। कम्यूनिस्ट चीन की ये जल-विद्युत रणनीतियां तिब्बत और भारत के खतरों से अपनी

अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा के लिए पीआरसी की एक महत्वपूर्ण सुरक्षा रणनीति है। कम्यूनिस्ट चीन का यह हाइड्रोलॉजिकल मॉडल अरुणाचल प्रदेश और असम जैसे तटीय राज्यों के लिए सबसे बड़ी पारिस्थितिकीय तबाही का कारण बन सकता है।

यह इस दुनिया के सबसे विकट मानवीय संकटों के लिए जिम्मेदार है। यारलुंग त्सांगपो पर इस शैतानी मॉडल को लागू करने से इस दुनिया की कोई भी ताकत पीआरसी को नहीं रोक सकती है।एकमात्र उम्मीद यही है कि चीनी शासन से तिब्बत की आजादी मिले, तभी यह संकट रुक सकता है। तिब्बत की आजादी यारलुंग सांगपो जैसी हिमालयी नदियों को आजादी देगी। चीनी शासन के तहत तिब्बत में हो रही पारिस्थितिकीय आपदा समाप्त होनी चाहिए, यारलुंग घाटी का संरक्षण यारलुंग त्सांगपो नदी के संरक्षण से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

फ्री तिब्बत-ए वॉइस फ्रॉम असम द्वारा 'त्सांगपो-सियांग-ब्रह्मपुत्र बचाओ'अभियान तिब्बती पर्यावरण और यारलुंग त्सांगपो जैसी तिब्बती नदियों के संरक्षण के लिए पारिस्थितिकीय आंदोलन को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के अरुणाचल प्रदेश और असम में रहने वाले भारतीय नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए उठना चाहिए और प्रत्येक भारतीय को नदी पर आधिपत्य की आड़ में पानी और पारिस्थितिकीय शोषण के कम्युनिस्ट चीनी गेम प्लान के विनाशकारी प्रभाव से समृद्ध ब्रह्मपुत्र सभ्यता को बचाने के लिए इस अभियान में भाग लेना चाहिए।

❖ भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने रांची में अपनी राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'मंथन २०२२' आयोजित की

२० दिसंबर, २०२२

१९ दिसंबर २०२२, नई दिल्ली। भारत में तिब्बत समर्थक समूहों में से एक, भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने १७ और १८ दिसंबर २०२२ को झारखंड की राजधानी रांची में अपनी शीतकालीन राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 'मंथन २०२२' का आयोजन किया। एमडीएलएम अस्पताल और अनुसंधान केंद्र, बूटी के सम्मेलन हॉल में आयोजित इस बैठक की मेजबानी बीटीएसएस की झारखंड शाखा ने की।

बैठक में भारत-तिब्बत समन्वय संघ के राष्ट्रीय संयोजक हेमेंद्र सिंह तोमर, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. विवेक गुरु, राष्ट्रीय महासचिव विजय मान और अरविंद केसरी और राष्ट्रीय महासचिव (महिला विंग) राजो मालवीय सहित भारत-तिब्बत समन्वय संघ के १५० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया।

बैठक के उद्घाटन सत्र में रांची के माननीय विधायक श्री सी.पी. सिंह के अलावाआरएसएस क्षेत्रीय प्रचारक श्री अनिल ठाकुर, पूर्व डीजीपी श्री डी. के. पांडे और बाबा महाहंस महाराज भी शामिल हुए।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में जून में उत्तर प्रदेश के वृंदावनमें आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 'चिंतन बैठक' के बाद से पिछले छह महीनों में बीटीएसएस की विभिन्न इकाइयों की गतिविधियों और कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। बैठक में तिब्बत के लिए काम करने और तिब्बती मुद्दे को मजबूत करने के लिए आने वाले छह महीनों के लिए बीटीएसएसकी कार्ययोजनाओं और कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। बैठक में कुछ नए कार्यकारिणी सदस्यों की नियुक्ति पर भी चर्चा हुई।

भारत-तिब्बत समन्वय संघ के आमंत्रण पर भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), नई दिल्ली के कार्यक्रम अधिकारी चोनी छेरिंग ने बैठक में भाग लिया। उन्होंने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय और इसकी भूमिका से सदस्यों का परिचय कराने के साथ बैठक को संबोधित किया। उन्होंने बैठक को तिब्बत के अंदर की मौजूदा स्थिति के बारे में जानकारी दी और तिब्बती मुद्दे के लिए उनकी निरंतर मदद और समर्थन की मांग की।

तिब्बती महिला संघ की उपाध्यक्ष छेरिंग डोल्मा भी उस बैठक में उपस्थित थीं जहां उन्होंने अपने संबोधन में बीटीएसएस के सदस्यों को तिब्बत के समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और तिब्बती मुद्दे के लिए बीटीएसएस की सभी गतिविधियों और कार्यक्रमों में अपने सहयोग का वादा किया।

रांची तिब्बती स्वेटर सेलर्स एसोसिएशन के सदस्यों ने अपने अध्यक्ष तेनज़िन ल्हुंडुप के नेतृत्व में कार्यक्रम में भाग लिया और एक तिब्बती नृत्य और भारतीय भाइयों-बहनों को समर्पित एक श्रद्धांजलि गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में रामगढ़ तिब्बती स्वेटर सेलर्स एसोसिएशन के सदस्य भी शामिल हुए।

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के समापन सत्र की शोभा झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री और झारखंड विधानसभा में विपक्ष के वर्तमान नेता श्री बाबूलाल मरांडी की उपस्थिति से और बढ़ गई।

आईटीसीओ के कार्यक्रम अधिकारी चोनी छेरिंग ने रांची और रामगढ़ के तिब्बती स्वेटर सेलर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर भारतीय गणमान्य व्यक्तियों और बीटीएसएस राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यों को पारंपरिक तिब्बती पवित्र स्कार्फ ' खटक' के साथ बधाई दी और बदले मेंआयोजन समिति ने तिब्बती सदस्यों को स्कार्फ और स्मारिका देकर सम्मानित किया।

बैठक में स्वतंत्रता, मानवाधिकार और न्याय के लिए तिब्बत और तिब्बतियों के संघर्ष में मदद और समर्थन की अपनी प्रतिज्ञा के साथ सदस्यों, विशेष रूप से युवा सदस्यों में नई ऊर्जा और शक्ति का संचार हुआ।

❖ कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल में 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन' पर संगोष्ठी

१३ दिसंबर, २०२२

१२ दिसंबर २०२२, नई दिल्ली। परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३३वीं वर्षगांठ के अवसर पर १० दिसंबर, २०२२ अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस को तिब्बत जागरूकता संगोष्ठी के रूप के साथ मनाई गई। संगोष्ठी का आयोजन भारत- तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस), नैनीताल द्वारा इसके संयोजक श्री नवीन पनेरू के नेतृत्व में डॉ. राजेंद्र प्रसाद लॉ इंस्टीट्यूट, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल में किया गया था। इसमें संस्थान के प्राध्यापकों और छात्रों ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के ७० से अधिक छात्रों और २० कर्मचारियों ने भाग लिया।

आईटीएफएस,नैनीताल के संयोजक श्री नवीन पनेरू ने परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत की और भारत के लोगों से यह याद रखने का आह्वान करते हुए तिब्बत के मुद्दों के बारे में जानकारी दी कि भारत से लगती ४०००वर्ग किलोमीटर की सीमा जो आज चीन के साथ है, १९५०से पहले एक स्वतंत्र देश- तिब्बत के

साथ लगती थी। ५० के दशक में चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया और उसे अपने नक्शे में मिला लिया। इसके बाद से वह लगातार तिब्बत के अस्तित्व को मिटाने की हरसंभव कोशिश कर रहा है। अब चीन की नजर अरुणाचल, सिक्किम और भूटान पर है। उन्होंने आगे कहा कि तिब्बत की भाषा, संस्कृति और धर्म की उत्पत्ति भारत की प्राचीन आध्यात्मिक भूमि से हुई है, इसलिए भारत और तिब्बत के बीच गुरु-शिष्य का संबंध है। तिब्बत और कैलाश-मानसरोवर का प्राचीन काल से भारत के साथ पौराणिक और आध्यात्मिक संबंध रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को तिब्बत और कैलाश- मानसरोवर के मुक्ति अभियान से जुड़ना होगा। उन्होंने हिमालय के सामरिक और राजनीतिक महत्व की ओर देश का ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

आईटीसीओ की कार्यवाहक समन्वयकताशी देकी ने सबसे पहले कशाग के वक्तव्य को पढ़कर सुनाया। इसमें कहा गया था कि मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा को अपनाने और लागू करने के बाद से पूरी दुनिया १० दिसंबर को मानवाधिकार दिवस मनाती है। हालांकि, तिब्बतियों के 'मानवाधिकारों' को कुचल दिया गया और वर्ष १९५९ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा हमारे देश 'तिब्बत' पर जबरन कब्जा कर लिया गया। उन्होंने आगे कहा,'तिब्बत के लोग ७० से अधिक वर्षों से प्रतिरोध कर रहे हैं और उन्होंने कभी भी हिंसक अतिवाद का सहारा नहीं लिया। इसके बजाय, केंद्रीय तिब्बती प्रशासनपरम पावन १४वें दलाई लामा के मार्गदर्शन में 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' के आधार पर अभियान चलाता है। 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' में तिब्बती लोगों के लिए वास्तविक स्वायत्तता का प्रस्ताव है जो पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के ढांचे के भीतर केवल स्वशासन (क्षेत्रीय प्रशासन) और हमारी भाषा, संस्कृति, धर्म, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और अन्य बुनियादी जरूरतों के संरक्षण की बात करता है। 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' तिब्बत के अंदर गंभीर समस्याओं, जिसका समाधान अब अत्यावश्यक हो चुका है, सबसे व्यवहार्य और यथार्थवादी समाधान है।

उन्होंने तिब्बत के अंदर वर्तमान स्थिति के बारे पर अपनी जानकारी को प्रस्तुत किया। तिब्बती पहचान के विनाश करने के साथ इसका चीनीकरण कर एकल हान राष्ट्रीय पहचान की भावना को मजबूत करने की चीनी वर्चस्ववादी नीति को उजागर करते हुएउन्होंने समझाया कि चीनी अधिकारियों के खिलाफ किसी भी अभिव्यक्ति (शांतिपूर्ण प्रदर्शन) को वहां अलगाववाद माना जाता है और मृत्युदंड जैसी कठोर सजा तक दी जाती है। इसने तिब्बत के अंदर तिब्बतियों को शांतिपूर्ण विरोध करते हुए आत्मदाह करने पर मजबूर किया है। इन परिस्थितियों ने तिब्बत के अंदर न्याय की अपील करने के लिए प्रेरित किया है। तिब्बत में चीनी आबादी के लगातार प्रवाह ने तिब्बत की संस्कृति और तिब्बती खानाबदोशों और किसानों के रहवास को नष्ट कर दिया है, जिसने तिब्बतियों को अपने ही देश में अल्पसंख्यक बना दिया है। खनन, वनों की कटाई और बांधों के निर्माण के माध्यम से लिथियम जैसे प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने न केवल तिब्बत के अंदर बल्कि पूरी दुनिया के तिब्बतियों के जीवन को खतरे में डाल दिया है। उन्होंने दुनिया भर में तिब्बत और तिब्बती भाइयों और बहनों के साथ एकजुटता से खड़े होने के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीटीए के संग्रह से 'तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन' पर दो वीडियो वृत्तचित्र प्रस्तुत किए गए औरजनता की बेहतर समझ और भागीदारी के लिए खुली चर्चा आयोजित की गई।

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथियों एवं वक्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. दीपकी जोशी ने कहा कि आज विश्व में सबसे अधिक मानवाधिकारों का हनन तिब्बत में हो रहा है। उन्होंने कहा कि इस पर किसी भी सभ्य समाज को चुप नहीं रहना चाहिए। बहुत कम लोगों को इस बात का एहसास होता है कि अपने स्वाभिमान और शान की बलि देकर जीना कितना मुश्किल होता है। उन्होंने सभी से भारत-तिब्बत मैत्री संघ में शामिल होने का आह्वान किया और इस संबंध में आईटीएफएस द्वारा किए जा रहे कार्यों के लिए आभार व्यक्त किया।

इस मौके पर डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय, डॉ. उज्मा, डॉ. वी.के. रंजन, श्री सागर पाटनी, श्री जी.सी. पाण्डेय, श्री के.पी. पाण्डेय, श्री नीरज जोशी, श्री देवेन्द्र आर्य एवं श्री देवेन्द्र शाह के अलावा अनेक विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

❖ भारत में तिब्बत समर्थक समूहों ने नोबेल शांति पुरस्कार दिवस और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस मनाया

१५ दिसंबर, २०२२

१४ दिसंबर २०२२, नई दिल्ली। १० दिसंबर २०२२ को अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस और परम पावन १४वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान करने की ३३वीं वर्षगांठ को भारत और दुनिया भर में तिब्बतियों और तिब्बत समर्थकों द्वारा मनाया गया। इस अवसर परभारत में तिब्बत समर्थन समूहों ने विभिन्न कस्बों और शहरों में तिब्बत मुद्दे को उजागर करने वाली गतिविधियों और कार्यक्रमों में तिब्बती भाइयों के साथ शामिल हुए।

झारखंड के हजारीबाग में आईटीएफएस के अध्यक्ष और कोर ग्रुप फॉर तिब्बती कॉज- इंडिया (सीजीटीसी-आई) सुदेश कुमार चंद्रवंशी के नेतृत्व में भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) ने नोबेल शांति पुरस्कार दिवस और विश्व मानवाधिकार दिवस मनाया। इसमें सैकड़ों बुद्धिजीवियों और तिब्बत समर्थकों ने हिस्सा लिया। बिहार के मुजफ्फरपुर में आईटीएफएसऔर तिब्बती ल्हासा मार्केट ने इस अवसर का जश्न मनाया और तिब्बती ल्हासा मार्केट में 'तिब्बत में मानवाधिकार' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रोफेसर एस.एन.पी. सिन्हा, आईटीएफएस बिहार के अध्यक्ष डॉ. हरेंद्र कुमार और सीजीटीसी-आई के राष्ट्रीय सह संयोजक सुरेंद्र कुमार ने की। महाराष्ट्र के परभणी में तिब्बत समर्थकों और तिब्बती स्वेटर एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यकम में आईटीएफएस नागपुर के संदेश मेश्राम, आईटीएफएस सदस्य श्रीमती शांतताई उखड़कर जैन, प्रहार जनशक्ति पार्टी के जिलाध्यक्ष शिवलिंग बोडने, श्रीमती माधवी घोड़के, शिवसेना के विजय खिस्टे, सचिन रसल पाटिल, दिलीप सोनवणे,

एडवोकेट संतोष जाधव, आनंद वर्मा, लुंडुप दोरजे, केलसंग, छेरिंग वांगचुक, श्रीमती यांगी, थुप्टेन निंगजे, येशी और तिब्बती स्वेटर एसोसिएशन के पदाधिकारी और बुद्धिजीवी, सामाजिक-राजनीतिक कार्यकर्ता, उद्यमी आदि उपस्थित थे। महाराष्ट्र के भंडारा में आईटीएफएसऔर तिब्बती स्वेटर सेलर्स एसोसिएशन ने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस और नोबेल शांति पुरस्कार दिवस पर संयुक्त रूप से कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में विदर्भ मार्केटिंग फेडरेशन के निदेशक महेंद्र गडकरी, समता सैनिक दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष दादासाहेब काचे, आईटीएफएस महाराष्ट्र के अध्यक्ष अमृत बंसोड, समतेन लोबसांग, नामग्याल पलजोर और तिब्बती स्वेटर एसोसिएशन के नोरबू लेकजोम उपस्थित हुए।

मध्य प्रदेश के सागर मेंआईटीएफएसने कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें तिब्बती सांसद मिंग्युर दोरजी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। आईटीएफएस मध्य प्रदेश के अध्यक्ष अजय खरे विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए और अध्यक्षता आईटीएफएस के महासचिव डॉ. शरद सिंह ने की। तिब्बती स्वेटर विक्रेता संघ के अध्यक्ष छेरिंग पलजोर और फुरबू ने अतिथियों का स्वागत किया। राजस्थान के जोधपुर मेंभारत-तिब्बत मैत्री संघ और तिब्बती स्वेटर विक्रेता संघ ने औपचारिक समारोह का आयोजन कर इस अवसर को बड़े उत्साह के साथ मनाया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय महिला संयोजक एवं आईटीएफएस राजस्थान की प्रदेश अध्यक्षरेशम बाला के पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में किया गया।

भारत- तिब्बत मैत्री संघ ने अहमदाबाद (गुजरात), नैनीताल (उत्तराखंड), सीतामढ़ी (बिहार), रांची (झारखंड), बेंगलुरु और मैसूरू (कर्नाटक) में भी इस दिन को मनाया। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) ने दोनों कार्यक्रमों को शानदार तरीके से मनाया, जहां तिब्बती महिलाएं, नेता और बीटीएसएम गुजरात प्रांत के उपाध्यक्ष कांतिभाई रांडेरिया और सहयोगी बीटीएसएम सदस्य प्रदीपभाई पारेख भी मौजूद थे। राजस्थान के बीकानेर में बीटीएसएमने एक सेमिनार का आयोजन किया और भारत के पड़ोसी देश तिब्बत में कम्युनिस्ट चीन द्वारा किए गए मानवाधिकारों के हनन की निंदा की। बीकानेर फोरम के जिला अध्यक्ष सुनील बांठिया ने चीनी सरकार द्वारा लोकतंत्र के दमन और तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के मानवाधिकारों के उल्लंघन पर प्रकाश डाला।

बीटीएसएमऔर अन्य तिब्बत समर्थक समूहों ने मध्य प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र के सागर में इस अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में तिब्बती सांसद मिंग्युर दोरजी थे। उनका स्वागत बीटीएसएम जिला अध्यक्ष बिट्टू पांडे पहलवान ने किया। कार्यक्रम में तिब्बती स्वेटर विक्रेता संघ के सदस्यों ने भी भाग लिया। बीटीएसएम श्रीगंगानगर, राजस्थान द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीगंगानगर के तिब्बती स्वेटर विक्रेताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा जिलाध्यक्ष आत्माराम तारद एवं मुख्य वक्ता के रूप में बीटीएसएम जिलाध्यक्ष शरद अग्रवाल ने शिरकत की।

हरियाणा के गुरुग्राम में बीटीएमएसने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया, जहां गुरुग्राम के विधायक सुधीर सिंगला तथा पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की बहू और बीटीएमएस की राष्ट्रीय सचिव श्रीमती नीरा शास्त्री मौजूद रहीं। इस कार्यक्रम में तिब्बतियों और उत्तर-पूर्व के मित्रों के साथ सैकड़ों अतिथि और सहकर्मी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान लद्दाख छात्र संघ और उत्तर-पूर्व छात्र संघ के सदस्यों ने तिब्बती, भूटानी, लद्दाखी और हिमाचली लोक नृत्य की सुंदर झलकियां प्रस्तुत कीं। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में बीटीएमएसद्वारा दलाई लामा नोबेल शांति पुरस्कार कार्यक्रम की ३३वीं वर्षगांठ का आयोजन तिब्बती स्वेटर विक्रेता संघ के साथ मिलकर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ग्वालियर की मेयर शोभा सतीश सिकरवार थीं। कार्यक्रम में बीटीएमएसमध्य भारत प्रांत के अर्जुन अग्रवाल, महिला विभाग की प्रदेश अध्यक्ष मोनिका जैन, विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय संपर्क प्रमुख कमल भदौरिया व नीलम गुप्ता शामिल हुए।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने इस अवसर पर दिल्ली, गाजियाबाद, वाराणसी, पंजाब, छत्तीसगढ़, अवध, मालवा, भीलवाड़ा, बिहार, मेरठ, कोंकण, इंदौर, सूरत, मुजफ्फरनगर, भीलवाड़ा, इलाहाबाद और बिलासपुर में भी तिब्बत में मानव अधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने और तिब्बती आंदोलन के प्रति समर्थन जुटाने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया।

भारत-तिब्बत समन्वय संघ (बीटीएसएस) ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में तिब्बती भाइयों-बहनों के साथ इस अवसर को मनाया। लखनऊ के तिब्बती बाजार में एक खास आयोजन हुआ। इस आयोजन में बीटीएसएस के केंद्रीय संयोजक हेमेंद्र तोमर, प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सचिन श्रीवास्तव, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य (युवा) अनूप बाजपेयी, प्रदेश महासचिव मुकेश तिवारी, क्षेत्र महासचिव (युवा) जय नारायण सिंह, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य (युवा) लाल बाबू तिवारी, लखनऊ जिला मुख्य संयोजक अमित गांधी, प्रांत महिला महासचिव डॉ. कल्पना सिंह, प्रतियोगिता प्रमंडल के प्रांत समन्वयक अतुल यादव आदि मौजूद रहे। उत्तर प्रदेश के कानपुर मेंतेजस चतुर्वेदी के नेतृत्व में बीटीएसएस ने तिब्बती बाजार, रामलीला मैदान, बडादेवी में इस दिन को मनाने के लिए तिब्बती भाइयों और बहनों के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया।

दिल्ली में बीटीएसएस ने तिब्बती चिल्ड्रन विलेज स्कूल, मजनूं का टीला में इस अवसर को मनाया। यहां आयोजित कार्यक्रम में नामग्याल छेकी, राष्ट्रीय अध्यक्ष (महिला विभाग), संध्या सिंह (उत्तर क्षेत्र अध्यक्ष, महिला विभाग), अजीत दुबे, (प्रांत समन्वयक, आईटी डिवीजन, दिल्ली प्रांत), साधना (दिल्ली प्रांत उपाध्यक्ष महिला विभाग), एडवोकेट रणवीर सिंह बैंसला (दिल्ली प्रांतीय उपाध्यक्ष युवा विभाग), हृदय सिंह (जिला अध्यक्ष, बाल विभाग, द्वारका जिला), उमेश चौहान, संदीप कुमार, निशांत शर्मा सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे। राजस्थान के उदयपुर में, तिब्बती समुदाय के बीटीएसएस सदस्यों ने इस अवसर को मनाया। समारोह में चित्तौड़ प्रांत के अध्यक्ष दिनेश जी गुप्ता, रमन सूद और क्षेत्रीय महासचिव (उत्तर-पश्चिम क्षेत्र) संजय सोनी उपस्थित थे। बीटीएसएस के हिमाचल प्रदेश उपाध्यक्ष तेनजिंग सुंगरब की देखरेख में शिमला के शेर-ए-पंजाब चौक पर बीटीएसएस, टीवाईसी और अन्य संगठनों का एक संयुक्त कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में बीटीएसएस के तत्वावधान में तिब्बती भाई-बहनों के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता तिब्बती मार्केट एसोसिएशन के अध्यक्ष छेवांग धुंधुप ने की। कार्यक्रम का संचालन धीरज सिंह ने किया। कार्यक्रम का विषय 'तिब्बत की आजादी, भारत की सुरक्षा और कैलाश-मानसरोवर की मुक्ति' था। कार्यक्रम में डॉ. घनश्याम दुबे ने तिब्बत में मानवाधिकार हनन पर प्रकाश डाला। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय अध्यक्ष संदीप त्यागी रसम ने गाजियाबाद के गजप्रस्थ स्थित तिब्बती बाजार में तिब्बती भाई-बहनों के साथ प्रार्थना सभा में भाग लिया।

भारत-तिब्बत समन्वय संघ ने इस अवसर को देहरादून (उत्तराखंड) और नोएडा (उत्तर प्रदेश) में भी मनाया।

अंतरराष्ट्रीय भारत-तिब्बत सहयोग समिति (एबीटीएसएस) ने उत्तर प्रदेश के मेरठ में विश्व मानवाधिकार दिवस और परम पावन दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किए जाने की वर्षगांठ मनाई।

अरुणाचल प्रदेश के तवांग में तिब्बत समर्थक समूहों ने इस अवसर पर परम पावन दलाई लामा के दीर्घायु होने के लिए प्रार्थना करने के माध्यम से उत्सव का आयोजन किया।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Deputy Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
उप–समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः indiatibet7@gmail.com

भारत-तिब्बत मैत्री संघ, हजारीबाग
विश्व मानवाधिकार एवं परम पावन दलाई लामा जी
का 33वां नोबेल शांति पुरस्कार दिवस
10 दिसम्बर 2022
हजारीबाग (झारखण्ड)

CELEBRATING 33 Anniversary

सन 1989 में महामहिम श्री दलाई लामा जी को
नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

भारत - तिब्बत मैत्री संघ

DALAI LAMA
NOBLL PEACE PRIZE

हस्ताक्षर अभियान